सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका

14 वां अंक

वर्ष – 2019

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स

प्रथम तल, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाईट :- www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता :- hindicellgssa.wbl.au@cag.gov.in

राजभवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सत्यमेव जयते

सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका

14 वां अंक

वर्ष – 2019

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स
प्रथम तल, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001
दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174
वेबसाईट :- www.agwb.cag.gov.in
ई-मेल पता :- hindicellgssa.wbl.au@cag.gov.in

‘सोनार बांग्ला’ परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री शरत चतुर्वेदी, प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री मुकुट मुखर्जी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

श्री तिमिर भद्र, वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I)

डॉ. लिंगराज नायक, उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-III)

श्री मनोज कुमार मोवार, कल्याण अधिकारी

संपादक मंडल

-: प्रधान संपादक :-

श्री अरूप दत्ता

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सम्पादक

श्रीमती ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

श्री प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

श्री अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्रीमती प्रीति सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्री बिपुल कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

टंकण कार्य

श्री सोनु कुमार चौधरी

आंकड़ा प्रविष्टक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति

-: अध्यक्ष :-

श्री मनोज कुमार मोवार

कल्याण अधिकारी

-: सदस्य :-

श्री नवल किशोर पांडेय
लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

श्री प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण :-

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जाँच एवं पुनरीक्षण समिति/सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश		पृष्ठ संख्या
1.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री शरत चतुर्वेदी	01
2.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	श्री मुकुट मुखर्जी	02
3.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I) का संदेश	श्री तिमिर भद्र	03
4.	उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-III) का संदेश	डॉ लिंगराज नायक	04
5.	कल्याण अधिकारी का संदेश	श्री मनोज कुमार मोवार	05
6.	संपादकीय	श्री अरूप दत्ता	06
7.	आपके पत्र		07
	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन/कहानी/अनूदित	**लेखक/रचनाकार**	
8.	मुख पृष्ठ परिचय	श्री प्रशांत कुमार	11
9.	क्षीण होते रिश्ते	श्रीमती ओलिभ बारा	12
10.	राष्ट्रवाद और एकता की भावना	श्री उत्पल चटर्जी	14
11.	एक मौन आदर्श	श्री बिपुल कुमार साव	16
12.	भात	श्रीमती प्रीति सिंह	18
13.	मानसिकता	श्रीमती सुदेश कुमारी	23
14.	संसार की ओर लौटने की यात्रा	श्री प्रशांत कुमार	24
15.	17 वाँ लोक सभा चुनाव 2019	श्रीमती ओलिभ बारा	25
16.	पर्यावरण संकट	श्री अमरेश कुमार	27
17.	प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी	श्री प्रभात कुमार	28
	कविता/गीत/व्यंग्य		
18.	द्वेष	श्री ओम प्रकाश चौधरी	30
19.	हर्ष	श्रीमती गुंजा कुमारी	31
20.	पुरुषार्थ	श्रीमती स्नेहलता	32
21.	एक-दूजे के लिए	श्री सुरजीत घोष	33
22.	बदलेगी ये दुनिया	श्री संजय कुमार	34
23.	हम अबला नहीं	श्रीमती ओलिभ बारा	35
24.	ये राहें	श्री अरुण विकास	37
25.	द्रौपदी के शब्द	श्री प्रशांत कुमार	38
26.	अव्यक्त	श्री भास्कर सेनगुप्ता	40
27.	जिंदगीः एक परिचय	श्री प्रमोद कुमार दास	41
28.	क्योंकि इंसान भी बदलते है	श्री अमरेश कुमार	42
	बाल रचनाकार		
29.	आई.पी.एल.	श्रेयस कुमार मोवार	43
30.	प्रहरी	विशाल मंडल	44
31.	कुछ तो रहम करो	कुमारी आस्था बारा	45
	कार्यालयीन गतिविधियां		
32.	हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम एवं विजेता सूची	स्रोत : हिन्दी कक्ष	47
33.	विविध गतिविधियां	स्रोत : कल्याण अनुभाग	49

प्रधान महालेखाकार का संदेश

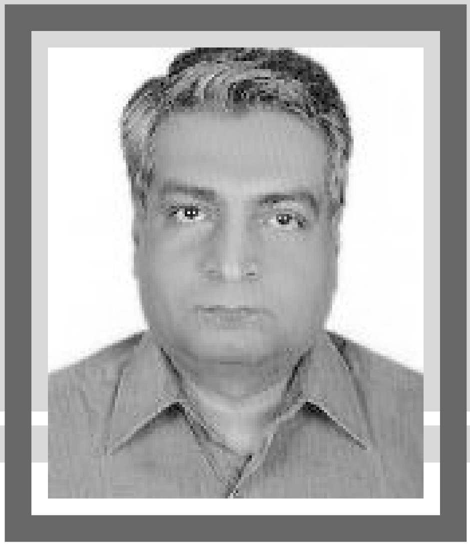

मैं यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं कि हमारे कार्यालय की साहित्यिक पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के दैनिक कार्यालयीन दायित्वों के अतिरिक्त उनके परिश्रम से संभव हुआ है। अतः मैं कार्यालय के उन समस्त कर्मियों की विशेष रूप से प्रशंसा करता हूं जिन्होंने 'सोनार बांग्ला' के इस 14वें अंक में अपना योगदान दिया है। मैं समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस अंक के सफल प्रकाशन पर बधाई देता हूं और 'सोनार बांग्ला' के उत्तरोत्तर विकास की कामना करता हूं।

शरत चतुर्वेदी
प्रधान महालेखाकार
(सा. एवं सा. क्षे. लेप.) प. बंगाल

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सोनार बांग्ला" के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। "सोनार बांग्ला" का प्रकाशन, राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ कार्यालयीन जीवन में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने की ओर एक सकारात्मक कदम है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ एवं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ। हिन्दीतर रचनाकार विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं जिन्होंने अपनी बात हिन्दी माध्यम से व्यक्त कर हिन्दी भाषा के विकास में सार्थक योगदान दिया है।

मेरा विश्वास है कि "सोनार बांग्ला" का यह अंक राजभाषा के विकास में अहम् भूमिका निभाने में सफल होगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

मुकुट मुखर्जी
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
(सा. एवं सा. श्रे. लेख.) प. बंगाल

वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I) का संदेश

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सोनार बांग्ला" के नवीनतम अंक का प्रकाशन होना अत्यंत हर्ष का विषय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में "सोनार बांग्ला" का प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है, जो वर्ष भर के दौरान कार्यालय में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों का चित्र तो प्रस्तुत करती ही है, इसके साथ-साथ कार्यालय के कर्मियों की साहित्यिक रचनात्मकता को भी एक मंच प्रदान करती है।

मैं पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाओं के रचनाकारों को बधाई देता हूँ। पत्रिका के संपादन से जुड़े अधिकारी/कर्मचारी भी प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने पत्रिका को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है।

आशा करता हूं कि "सोनार बांग्ला" का यह नवीनतम अंक समस्त पाठकों की प्रशंसा दृष्टि प्राप्त करने में सफल रहेगा। पत्रिका का अनवरत प्रकाशन होता रहे एवं कार्यालय मे राजभाषा की धारा यूं ही प्रवाहित होती रहे, यही मेरी कामना है।

शुभकामनाओं सहित

तिमिर भद्र

वरिष्ठ उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-I)

उप महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र-III) का संदेश

'सोनार बांग्ला' राजभाषा पत्रिका एक कलात्मक नमूना, जिसमें हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारीयों के द्वारा योगदान दिया गया है, में सन्देश देते हुए मैं गौरवान्वित महसुस कर रहा हूँ। यह पत्रिका कार्यालय में प्रत्येक व्यक्ति को उनकी व्यस्त दिनचर्या में से उनकी सृजनात्मक सामर्थ्य को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। यह प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को एक मंच पर एक दूसरे के समीप भी लाती है ताकि सभी एक दूसरे के श्रेष्ठ पक्ष को समझा सकें।

मै आशा करता हूँ की राजभाषा में पत्रिका की यह परम्परा सभी अधिकारीयों एवं कर्मचारीयों को प्रेरित करती रहे। मैं पत्रिका की सफलता के लिए सम्पादकीय अनुभाग के प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ।

डॉ लिंगराज नायक

उपमहालेखाकार एस एस-III

कल्याण अधिकारी का संदेश

हमारे कार्यालय की और से वार्षिक हिन्दी पत्रिका “सोनार बांग्ला” का 14वां संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है, जो ‘ग’ क्षेत्र में स्थित कार्यालय के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है। साथ ही यह कार्यालय कर्मियों की हिन्दी के प्रति बढ़ते प्रेम का परिचायक भी है।

हिन्दी पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग एवं परिश्रम की मैं सराहना करता हूँ, जिसके बदौलत हिन्दी पत्रिका का नूतन संस्करण प्रकाशित हो रहा है। “सोनार बांग्ला” के 14वें संस्करण के लिए कामना करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक गण पत्रिका की रचनाओं को अवश्य पसंद करेंगे और अपना बहुमूल्य सुझाव देकर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगें।

श्री मनोज कुमार मोवार
कल्याण अधिकारी

संपादकीय

प्रिय पाठक वृन्द,

विभिन्न विधाओं से सुसज्जित कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'सोनार बांग्ला' का 14वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसका अनवरत प्रकाशन, पाठकगण की सराहना तथा कार्यालय के कर्मियों का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान से ही संभव हो सका है।

हम अपने मन के भाव व विचारों को दो तरह से व्यक्त करते हैं। एक संवाद के माध्यम से एवं दूसरी अपनी लेखनी द्वारा। संवाद द्वारा अभिव्यक्ति के लिए हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते है जो सरल होने के कारण संपर्क भाषा का काम करती है। हिन्दी कार्यालयीन राजभाषा ही नहीं अपितु जन-जन की भाषा है क्योंकि यह देश के बहुल क्षेत्र में बोली व समझी जाने वाली संपर्क भाषा है। 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद इसके संवर्धन में हमारे कार्यालय के कर्मी हिन्दी में काम काज द्वारा एवं लेखनी के माध्यम से प्रयासरत हैं जिसका प्रमाण इस अंक में प्रकाशित रचनाएं हैं।

मैं उम्मीद करता हूं कि 'सोनार बांग्ला' भविष्य में उत्कृष्टता लिए आपके हाथों में होगी।

शुभेच्छा सहित।

आपका आकांक्षी

अरुप दत्ता

प्रधान संपादक

आपके पत्र

पत्रिका में समाहित रचनाएँ, रोचक व ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं अन्तिम पृष्ठ आकर्षक है एवं पत्रिका की साज-सज्जा तथा मुद्रण अत्यंत मनमोहक है। रचनाओं में विशेषकर श्री ओम प्रकाश चौधरी जी की "जीवन का सार" वास्तविकता का बोध कराती है। श्री संदीप कुशवाह जी की "पासवर्ड बदल गया" आम जनता को धांधली के प्रति सजग करती है तथा खण्ड पर्यावरण विशेष विवेचनात्मक एवं अति विचारणीय है। उक्त रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय है।

कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), मध्य प्रदेश आडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर – 474002

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनायें सुन्दर, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। पत्रिका की साज सज्जा भी बहुत सुन्दर है। श्री कुमार अजय पटेल (शब्दों का मानवीय संचार में महत्व), श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली (स्वामी विवेकानन्द), श्री प्रभात कुमार (ऑडिटर बाबू), श्री मनोज कुमार मोवार (स्वच्छ भारत : सपना या हकीकत) की रचनायें उल्लेखनीय एवं उत्कृष्ट हैं।

कार्यालय – महानिदेशक लेखापरीक्षा, डाक व दूरसंचार, दिल्ली – 110054

पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम, बेलतला, गुवाहाटी – 29

पत्रिका का मुखपृष्ठ बंगाल की धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व कर रहा है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय हैं। श्री संदीप कुशवाहा की रचना 'पासवर्ड बदल गया' के माध्यम से उन्होंने फ्रॉड कॉल के द्वारा ऑनलाइन ठगी के प्रति हमें सचेत किया है। श्रीमती ओलिभ बारा का लेख 'जिन्दगी की रफ्तार' में रचनाकार ने हमेशा की समस्या सड़क दुर्घटना में होने वाले जान-माल की क्षति पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही राजलक्ष्मी गांगुली की रचना 'स्वामी विवेकानंद', गुंजा कुमारी की रचना 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' एवं श्री उत्पल चटर्जी की रचना 'प्रदूषण मुक्त भारत कैसे बनेगा' प्रेरणादायक है। पत्रिका में प्रकाशित 'हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस' के चित्रों ने पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाया है।

कार्यालय, महालेखाकार (लेखा व हकदारी) –II, महाराष्ट्र, नागपुर – 440001

पश्चिम बंगाल जैसे अहिन्दी भाषी प्रदेश जो कि "ग" क्षेत्र से संबंधित है, राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका का प्रकाशन प्रत्येक दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं सभी छायाचित्र अति सुन्दर है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं।

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा बहुत सुंदर है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर 'समर अभी है बाकी', 'स्वामी विवेकानंद', 'जीवन का सार', 'वीरों की शहादत' और 'जल संचयन' प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न समाचार, तस्वीरें तथा पत्रिका का कलेवर प्रशंसनीय व मोहक हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) मेघालय, शिलांग – 793001

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय, रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से 'शब्दों का मानवीय संचार में महत्व', 'स्वामी विवेकानन्द', 'बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं', 'जीवन का सार', 'बेटी के पिता का आहवान' एवं 'ग्लोबलवार्मिग : एक गम्भीर समस्या' आदि रचनाएं अत्यंत सराहनीय है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़ – 160020

पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर हैं, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छी लगीं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली (स्वामी विवेकानंद), श्रीमती गुंजा कुमारी (बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ), श्री संदीप कुशवाह (पासवर्ड बदल गया), श्री अरुण विकास (सोचना हूँ मैं एवं पेड़ भी उदास होते हैं), श्री प्रशांत कुमार (बेटी का पापा के प्रति आह्वान) एवं श्री प्रभात कुमार की (पापा एवं ऑडिटर बाबू) आदि रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, कलेवर एवं साज-सज्जा स्वतः ही ध्यान आकर्षित करते हैं। राजभाषा हिंदी के विकास मे योगदान स्वरूप इस पत्रिका मे समाहित सभी रचनाएँ न केवल उच्चकोटि के ज्ञानवर्धक व पठनीय है बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देते हैं। प्रकाशित रचनाओं में श्री मनोज कुमार मोवार जी की 'वीरों की शहादत', श्री अरुण विकास जी की 'पेड़ भी उदास होते हैं', श्री संदीप कुशवाहा जी की 'पासवर्ड बदल गया' एवं श्री संदीप सिन्हा जी का 'जल संचयन' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

पत्रिका अत्यंत आकर्षक है एवं इसमें सभी लेख अपने आप में एक अलग एवं अद्भुत विषयवस्तु को समाहित करते हुए अपने शीर्षक को सर्वोचित सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका निश्चित रूप से राजभाषा हिंदी के प्रसार हेतु लक्षित उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है एवं चिरकाल तक अपने विकास पथ पर अनवरत अग्रसर रहे, यही हमारी कामना है।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर – 273012

पत्रिका में समाहित संपूर्ण रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगी। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर एवं पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के अन्दर की झलकियाँ अत्यन्त सराहनीय है।

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (सा. व सा. क्षे. लेप.) कर्नाटक, बैंगलूरु – 560001

रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। 'पापा', 'यादें', 'पानी', 'जीवन का सार', 'समर अभी भी है बाकी' आदि रचनाएं रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटका, बेंगलूर – 560001

पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। "ग" क्षेत्र में आपका कार्यालय होते हुए भी रचनाकारों का राजभाषा के प्रति प्रेम सराहनीय है। सभी रचनाएं उत्तम स्तर की है इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर श्री सायन्त बनर्जी, स.लेप.अ. द्वारा माँ दुर्गा का चित्र बहुत सुंदर है तथा पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर दिया गया "फिकस बँधालेंसिस एल" विशालकाय बरगद का चित्र बहुत ही सुंदर है तथा पाठकों का ध्यान आकर्षित और इसके विषय में सोचने के लिए विवश करता है। कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी निखारा है। पत्रिका का प्रत्येक पृष्ठ रंगीन होने के कारण पत्रिका में निखार आया है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, जम्मू – 180001

कार्यालय 'ग' क्षेत्र में होने के बाद भी हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करना राजकाज में हन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने का एक सार्थक प्रयास एवं सराहनीय कदम है। पत्रिका में समाहित रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं पर्यावरण विषयों से संबंधित है। पत्रिका के छायाचित्र विशेष रूप से सुन्दर, मनमोहक एवं आकर्षक है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापीरक्षा) राजस्थान, जनपथ, जयपुर – 302005

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। श्री संदीप कुशवाह की कविता 'समर अभी है बाकी', श्रीमती ओलिभ बारा का आलेख 'जिंदगी की रफ्तार', श्री ओम प्रकाश चौधरी का आलेख 'जीवन का सार', श्री प्रशांत कुमार की कविता 'बेटी के पिता का आह्वान' एवं श्री मनोज कुमार मोवार की कविता 'वीरों की शहादत' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओड़िसा, भुवनेश्वर – 751001

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ ज्ञानप्रद, मनोरंजक तथा रुचिकर हैं तथा पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ठ दर्जे की है। श्री संदीप कुशवाह द्वारा लिखित कहानी 'पासवर्ड बदल गया' बेहतरीन और प्रेरक रचना है। श्रीमती ओलिभ बारा की कविता 'सावन के रंग' जीवन के आह्लाद का मार्मिक स्फुरण करती है। पत्रिका में संकलित चित्र कार्यालयीन स्मृतियों को ताजा कर देते हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को बधाई तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

डाक व दूरसंचार लेखापरीक्षा कार्यालय, बी.एस.एन.एल. कॉम्प्लेक्स, प्रशासनिक भवन, चौथी मंजिल, सी-स्कंध, जुहू रोड, सातांक्रूज (पश्चिम), मुंबई – 400054

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही है। आशा है कि भविष्य में भी 'सोनार बांगला' राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने मे प्रेरक भूमिका निभाएगी। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों मे निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। साथ ही, बंगाल के बारे में दिया गया विवरण

काफी ज्ञानवर्धक है। 'सोनार बांगला' में समाविष्ट सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। विशेषकर 'पासवर्ड बदल गया', 'जिंदगी की रफ्तार', हर समय जागरुक रहने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही, पर्यावरण के संबंध में प्रस्तुत की गई रचनाएँ भी अत्यंत सराहनीय, पठनीय और प्रासंगिक हैं।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई – 18

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड का कार्यालय, रांची – 834002

पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवं सभी रचनाएं अत्यन्त ज्ञानवर्धक, नीतिपरक एवं रोचक हैं। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री कुमार अजय पटेल जी द्वारा लिखित लेख "शब्दों का मानवीय संचार में महत्व", श्रीमती ओलिभ बारा जी द्वारा लिखित लेख 'जिन्दगी की रफ्तार', श्रीमती गुंजा कुमारी जी द्वारा लिखित लेख 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ', श्री अरुण विकास जी द्वारा लिखित कविता 'सोचता हूँ मैं', श्री मनोज कुमार मोवार जी द्वारा लिखित लेख 'स्वच्छ भारतः सपना या हकीकत', श्री सोनु कुमार चौधरी जी द्वारा लिखित कविता 'पानी' सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद है।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं क्षेत्र राजस्व लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल, कोलकाता

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद व प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ-साथ उसकी साज-सज्जा अर्थात कलेवर, कागज, मुद्रण और उसमें अंतर्निहित फोटो सराहनीय हैं। पत्रिका में समाहित रचनाएं, विशेषकर - 'शब्दों का मानवीय संचार में महत्व', 'समर अभी भी है बाकी', 'पासवर्ड बदल गया', 'स्वच्छ भारतः सपना या हकीकत?', 'पानी', 'वीरों की शहादत' बहुत रोचक हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड, देहरादून – 248195

पत्रिका को पर्यावरण विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का अत्यंत ही सराहनीय प्रयास किया गया है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्री सायन्त बनर्जी द्वारा चित्रित मां दुर्गा का चित्र निश्चय ही अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाओं में – स्वच्छ भारत, जल संचयन, ग्लोबल वार्मिंग द्वारा जहां पर्यावरण संबंधी ज्वलंत मुद्दों को बहुत सुंदर ढंग से उठाया गया है, वहीं अन्य रचनाएं यथा – श्री तरुण कुमार गोस्वामी की कविता 'यादें', श्री संदीप कुशवाह की कविता 'समय अभी भी है बाकी', श्री अरुण विकास की कविता 'पेंड़ भी उदास होते हैं' अत्यंत रोचक हैं। अन्य लेख – कविताएं को भी साधुवाद।

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – द्वितीय का कार्यालय, मध्यप्रदेश

इस पत्रिका की सभी रचनाएं प्रेरणास्पद, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

डाक व दूरसंचार लेखापरीक्षा का कार्यालय, हैदराबाद – 500001

अंक पठनीय एवं उत्कृष्ट है। पत्रिका का स्वरूप लुभावना है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौन्दर्य भी आकर्षित करता है। श्रीमती गुंजा कुमारी की "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ", श्री मनोज कुमार मोवार की "वीरों की शहादत", श्री संदीप सिन्हा का "जल संचयन" आदि काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना

पत्रिका का मुखपृष्ठ अति सुंदर एवं मनोरम है। पत्रिका में शामिल की गई सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री संदीप कुशवाह जी की "पासवर्ड बदल गया", श्री प्रशान्त कुमार जी की कविता "बेटी के पिता का आह्वान", श्री मनोज कुमार मोवार जी की कविता "वीरों की शहादत", "स्वच्छ भारतः सपना या हकीकत" एवं श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली जी की "ग्लोबल वार्मिंगः एक गम्भीर समस्या" आदि रचनाएं उल्लेखनीय, विचार प्रधान, प्रेरक एवं जीवनोपयोगी हैं। पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षे. लेप.) का कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें शिक्षाप्रद, प्रशंसनीय व पठनीय हैं। पत्रिका में समाहित रचनाएं, विशेषकर – श्री संदीप कुशवाहा द्वारा रचित "समर अभी भी है बाकी", श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली द्वारा रचित "स्वामी विवेकानंद" श्रीमती ओलिभ बारा द्वारा रचित "सावन के रंग", श्री प्रशांत कुमार द्वारा रचित "बेटी के पिता का आह्वान", श्री उत्पल चटर्जी द्वारा रचित "प्रदूषण मुक्त भारत – कैसे बनेगा" बहुत अच्छी लगी। अन्य विभिन्न लेख और कवितायें भी रोचक हैं तथा अर्थ से भरी हुई है।

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी)-I , महाराष्ट्र, मुंबई – 400020

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएं अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक एवं रोचक हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत सराहनीय और प्रासंगिक भी है।

महा निदेशक, लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता – 700001

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ बहुत ही आकर्षक है। सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। विशेषतः कविता "बेटी के पिता का आह्वान" बहुत ही सुंदर है। सभी लेख एवं कविता रोचक एवं पठनीय है।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चेन्नै का कार्यालय, लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै – 600018

पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख व रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। श्रीमती ओलिभ बारा का लेख "जिंदगी की रफ्तार" तथा श्री संदीप कुशवाह का लेख "पासवर्ड बदल गया" शिक्षाप्रद है। श्री प्रशांत कुमार की कविता "बेटी के पिता का आह्वान" तथा श्री मनोज कुमार मोवार की कविता "वीरों की शहादत" हृदयस्पर्शी है। श्री संदीप सिन्हा का पर्यावरण विशेष लेख "जल संचयन" प्रशंसनीय है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उ. प्र., इलाहाबाद – 211001

इस पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट व ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छ.ग., रायपुर–493111

फोटो म. ( ) हिन्ही कश्र के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मुखपृष्ठ परिचय

प्रशांत कुमार

वरिष्ठ अनुवादक

मार्बल पैलेस :- कोलकाता में सन् 1835 में निर्मित मार्बल पैलेस एक विशाल आलीशान प्रासाद है जिसमें मार्बल (संगमरमर) का बहुतायत में प्रयोग हुआ है। मार्बल की दीवारें, फर्श तथा प्रतिमाएं इस प्रासाद को बहुत सुंदर और आकर्षक स्वरूप प्रदान करती हैं। इसकी मूल स्थापत्य शैली पाश्चात्य निओ-क्लासिकल है जबकि इसका खुला प्रांगण योजना परम्परागत बंगाली शैली से प्रभावित है। इसमें बहुत-सी पाश्चात्य प्रस्तर प्रतिमाएं, विक्टोरियन फर्नीचर के खंड, पाश्चात्य एवं भारतीय चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्र, इत्यादि बहुत उत्तम अवस्था में संरक्षित रखे गए हैं।

प्रधान डाकघर (जी. पी. ओ.) :- प्रधान डाकघर (जनरल पोस्ट ऑफिस) पश्चिम बंगाल का मुख्य डाकघर है। आज जहां यह स्थित है, वो स्थल वास्तव में फोर्ट विलियम का स्थल था। इसका डिज़ाइन सन 1984 में वाल्टर बी ग्रेन्विल द्वारा तैयार किया गया था। दूधिया सफ़ेद प्रधान डाकघर अपनी भव्य उच्च गुंबददार छत और लंबे आयोनिक-कोरिन्थियन खंभों के लिए उल्लेखनीय है।

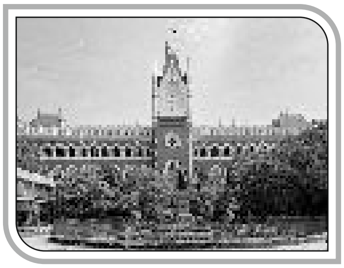

कोलकाता उच्च न्यायालय :- कोलकाता उच्च न्यायालय भारत में सबसे पुराना उच्च न्यायालय है। इसकी स्थापना 01 जुलाई 1862 को हुई थी। बेल्जियम के क्लॉथ हाल से प्रेरित इसकी इमारत को पाश्चात्य निओ-गॉथिक शैली में बनाया गया है।

नेताजी भवन :- स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस के पिता श्री जानकीनाथ बोस द्वारा सन् 1909 में कोलकाता में इस भवन का निर्माण करवाया गया था जिसे बाद में सुभाष चन्द्र बोस के सम्मानार्थक 'नेताजी' के आधार पर 'नेताजी भवन' कहा जाने लगा। अंग्रेज सरकार ने इसी भवन या घर में सुभाष चन्द्र बोस को नजरबन्द किया था जहां से वे 17 जनवरी 1941 को पठान के भेष में भाग निकलने में कामयाब हुए थे। वर्तमान में इसका स्वामित्व एवं प्रबंधन नेताजी रिसर्च ब्यूरो के पास है तथा इसमें नेताजी के जीवन पर आधारित एक संग्रहालय, अभिलेखागार एवं पुस्तकालय स्थित है।

क्षीण होते रिश्ते

ओलिभ बारा

पर्यवेक्षक

आधुनिकता एवं बदलते वक्त के साथ समाज में भारी बदलाव आया है। आज के दौर में रिश्तों की अहमियत सबके लिए बहुत जरूरी है। कभी हमारे भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का प्रचलन हुआ करता था जिसमें दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, बुआ से घर भरा-पूरा होता था। परिवार के प्रत्येक सदस्यों की जरूरतों का समान रूप से ख्याल रखा जाता था, चाहे वह बच्चों की पढ़ाई-लिखाई हो, पर्व-त्योहार हो, घर में कोई मांगलिक कार्य हो या कोई अन्य समस्या। माता-पिता अपनी अनुपस्थिति में बच्चों की जरूरतों, सुरक्षा व अन्य बातों की चिन्ता नहीं करते थे क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य बच्चों की देख-रेख में सदा तत्पर रहते थे। बच्चे भी अपने बड़े-बुजुर्गों के प्रति समान आदर-भाव रखते थे। गलतियों पर बड़ों की डांट उन्हें सही रास्ता दिखाती थी। पहले परिवार-नियोजन का प्रचलन नहीं था। बच्चों की अधिक संख्या के बावजूद अभिभावक अपनी क्षमता व हैसियत के अनुरूप उनका लालन-पालन सही तरीके से करते थे। बच्चों में अनुशासनहीनता न के बराबर ही देखी जाती थी। उनकी आवश्यकताएं एवं मांगें सीमित व जायज होती थी। किसी भी सदस्य की अस्वस्थता पर सारा परिवार सेवा में जुट जाता था। परिवार की आर्थिक व्यवस्था भी सुदृढ़ होती थी, चाहे वह गरीब तबके का हो या मध्यमवर्गीय; क्योंकि सभी परिवार के लिए कमाते थे, सिर्फ अपने लिए नहीं। सभी सदस्यों के बीच अपनापन व स्नेहिल व्यवहार होता था।

समय के बदलाव के साथ धीरे-धीरे संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में तब्दील होता जा रहा है। इसे समय की मांग समझे या जीवन-शैली में बदलाव या कुछ और। शायद इसकी सबसे बड़ी वजह परिवार के सदस्यों की सोच में एकरूपता का न होना है। सभी सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं। रिश्तों की अहमियत कम होती जा रही है। अपने पराये होते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार में सुख-दुःख के वक्त सभी शामिल होते थे, लेकिन अब तो बस शिष्टाचार के नाते एक फोन-कॉल कर हाल-चाल पूछ लिया जाता है। समय का अभाव, कार्य की व्यस्तता, बच्चों की पढ़ाई या कार्यालय से अवकाश न मिलने का बहाना बना दिया जाता है। अपनों के लिए अब वक्त ही कहां रह गया है? पर्व-त्योहार, शादी-ब्याह, श्राद्ध कर्म में भी बमुश्किल सारा परिवार एकत्र हो पाता है। समय के साथ रिश्तों की मधुरता में भी कमी आई है। टूटते-बिखरते, बदलते रिश्तों में अपनत्व न के बराबर रह गया है। अपनत्व एवं समरसता की जगह स्वार्थपरता ने ले ली है।

परिवार से समाज एवं समाज से देश का निर्माण होता है। बच्चे ही देश का भविष्य हैं। बच्चों की प्रथम पाठशाला परिवार को माना जाता है क्योंकि बच्चों को नैतिकता की सीख सर्वप्रथम परिवार से ही मिलती है। परिवार में बच्चों को जो शिक्षा मिलती है, आगे चलकर बच्चे उसी के अनुरूप ढल जाते हैं। बचपन में उन्हें यदि अच्छे संस्कार दिए जाएं, तो आगे चलकर वे एक संस्कारी व्यक्ति बनेंगे। अधिकांशतः एकल परिवार में हम दो, हमारा एक की नीति अपनायी जाती है। यही कारण है कि बच्चे 'मैं' व 'सिर्फ मेरा' की भावना से आत्मकेन्द्रित हो जाते हैं। बच्चों की आवश्यकताएं असीमित एवं मांगे दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं। उनकी मांगे भी तुरंत पूरी कर दी जाती हैं, बगैर इस पर गौर फरमाये कि उनकी मांगें कितनी जायज हैं। ऐसे अभिभावक जो दैनिक कार्य हेतु सुबह से शाम तक घर से बाहर होते हैं, उनके बच्चे घर में अकेले होते हैं। कामकाजी माता-पिता भी अपने

छोटे बच्चों की देखभाल के लिए या तो उन्हें 'क्रेच' में रखते हैं या फिर घर में ही आया-नौकर के भरोसे रखते हैं। परिस्थितियां जो भी हो, अभिभावकों में अपने बच्चों को लेकर हमेशा असुरक्षा का भाव बना रहता है। उन्हें जाने-अनजाने अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। बड़े होने पर भी उन्हें सारा दिन रोकने-टोकने वाला कोई नहीं होता है। कुछ हद तक उनमें उच्छृंखलता बढ़ती जाती है। आजकल देखा गया है कि गलतियों पर थोड़ी-सी डांट पड़ने या मांगे पूरी न होने पर बच्चे गलत कदम उठा लेते हैं। बच्चों के भरण-पोषण में बहुत सारी दिक्कतें आती हैं।

मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि संयुक्त परिवार ही सही है, एकल परिवार नहीं। यह कहना भी गलत होगा कि संयुक्त परिवार की तुलना में एकल परिवार में बच्चों की परवरिश सही तरीके से नहीं होती है। जो भी हो, परिवार में दुःख के पल में बड़े-बुजुर्गों की कमी हमेशा खलती है। कहावत है कि "बुरे वक्त में अपने ही काम आते हैं"। भले ही हमारी सोच में एकरूपता न हो, हम साथ-साथ न भी रहते हों, लेकिन अपनों के बीच में अपनत्व व स्नेह हो, तो हमारी जिन्दगी की गाड़ी सफलतापूर्वक आगे बढ़ती जाएगी। हमें अपने जीवन में अनुकूलता व प्रतिकूलता दोनों का ही सामना करना पड़ता है; जरूरत है दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की। हमें अपने अंदर की खामियों को समझना-परखना चाहिए। अगर हम दूसरों की खामियों को नजरअंदाज कर अपनी खामियों को दूर करने की कोशिश करें एवं सिर्फ उनकी अच्छाइयों को देखें, तो शायद परिवार में आपसी वैमनस्य की स्थिति कभी नहीं आएगी, साथ ही अपनों के बीच अपनापन बना रहेगा।

जीवन में ज्यादा रिश्ते होना जरूरी नहीं है। पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना जरूरी है।

- स्वामी विवेकानंद

राष्ट्रवाद और एकता की भावना

उत्पल चटर्जी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राष्ट्रीय एकता हर देशवासी के अन्दर एक जन्मजात और स्थायी अनुभव है। यह एक ऐसी चेतना है जो हर देशवासी में पायी जाती है। इसका तात्पर्य है कि देश में निवास करने वाले लोग जिनका अतीत, यादें, आशा और आकांक्षा आम हैं यानि कि एक समान है।

भारत एक महान देश है और यहाँ विभिन्न जाति, पंथो और वर्णो के लोग रहते हैं। वे भिन्न-भिन्न भाषाओं में बात करते हैं। तरह-तरह की पोशाकें पहनते हैं। भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। देखा गया है कि भारत में क्षेत्रवाद मुख्य रूप से कुछ कारकों में ही केंद्रित हैं जैसेः-

1. **भौगोलिक अलगाव** :- भारत एक बहुत बड़ा देश है, और यह भी सच है कि यहां बुनियादी ढांचे का विकास अब भी जारी है। इसका मतलब है कि हर राज्य और समुदाय में समान विकास नहीं पहुंच सका है जिसका कारण परिवहन और संचार सेवा पर्याप्त न होना रहा।

2. **असमान विकास** :- भारत के कुछ शहरों में विश्व स्तरीय औद्योगिक और तकनीकी सुविधाएं हैं। पर बहुत से ऐसे शहर भी हैं जहां अब भी यह सुविधा दूर है। ग्रामीण क्षेत्र और भी पिछड़ा हुआ है।

3. **सांस्कृतिक अलगाव का इतिहास** :- भारतीय समाज की परंपरा के अनुसार जहां एक जाति और भाषा के ज्यादा लोग निवास करते हैं वहां क्षेत्रवाद की भावना अभी भी काम करती है।

4. **राष्ट्रीय राजनीति पर असन्तोष और शक** :- भारतीय क्षेत्रवाद का एक कारण यह भी है कि कुछ लोग सोचते है कि उनका क्षेत्र या समुदाय अवहेलित और असमान विकास का शिकार है।

इन सब चरम विविधताओं तथा विरोध के बावजूद देशवासियों के अन्दर एक राष्ट्रवाद की भावना छुपी हुई है जो हम सबको संयुक्त रखता है। धरती के इस महान क्षेत्र पर प्राचीन काल से ही बहुत सारे आदर्शों और विचारों की धाराएं प्रवाहित होती चली आ रही हैं। कितने सारे महापुरूष आये, इतनी सारी लड़ाइयां, झगड़े और उथल-पुथल हुए परन्तु अभी भी भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा अटूट है।

बहुत लम्बे समय से देशवासियों के अन्दर छुपी हुई राष्ट्रवाद की भावना ने ही हमारी पहचान को संरक्षित करके रखा है। हमारे महान संत और विचारक लम्बे समय से एकता की भावना का विभिन्न रूपों में संरक्षण करते चले आ रहे हैं। कुछ निराशावादी और विदेशी शासकों ने यह भी स्थापित करने की कोशिश की है कि भारत में कई संस्कृतियों और धर्मों का मिश्रण है।

हालांकि क्षेत्रवाद की भावना को रोकने के लिए सबसे जरूरी है कि देश के हर क्षेत्र का विकास किया जाए। यह भी जरूरी है कि क्षमता हस्तानांतरण के साथ निर्णय लेने में भी आम लोगों को शामिल और सशक्त किया जाए। राज्य सरकारी स्तर पर स्थानीय लोगों के लिए रोजगार, प्रौद्योगिक एवं तकनीकी विकास, सटीक योजना और कृषि का विकास शामिल करते हुए राष्ट्रवाद की भावना को विकसित करने का प्रयास करना होगा।

देश में विभाजन की प्रवृति के नियंत्रण को सर्वोच्च प्राथमिकता देना अब सबसे जरूरी है। कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से पंजाब तक भारत एक ही देश है। कोई भी क्षेत्र एक दूसरे से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। भिन्न-भिन्न समुदायों को आपसी सहयोग और समन्वय की भावना (Spirit) बनाए रखते हुए साथ-साथ रहना पड़ेगा। इसके लिए बहुत आवश्यक है भारतीय राष्ट्रीयता (Indian Nationhood) तथा भारतीय संस्कृति के मूल विचारों का अहसास करना और पहचानना।

यह उम्मीद है कि आने वाले भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों का एकीकरण तथा प्रत्येक देशवासी में व्याप्त राष्ट्रवाद और एकता की भावना देश को और भी मजबूती की ओर ले जायेगा। कोई भी क्षेत्र अपने आप को अवहेलित नहीं समझेगा।

राष्ट्रवाद के लिए इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

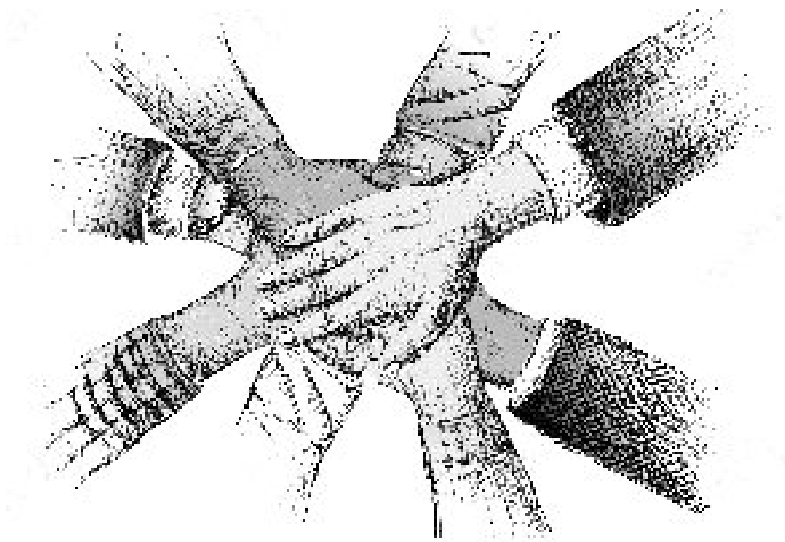

प्रान्तीय ईर्ष्या, द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।

- सुभाषचंद्र बोस

एक मौन आदर्श

बिपुल कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

कोलकाता शहर... मूसलाधार बारिश में भीगती एक शाम... रह-रह कर कड़कती हुई बिजली और उस बिजली की चमकती हुई रेखाएं ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वे आकाश को 'विभाजित' करने के साथ-साथ समाज के एक समूह को भी 'विभाजित' करने पर अमादा थी – 'चालकों का समूह'। इस समूह का एक हिस्सा चारों तरफ से बंद गाड़ियों के माध्यम से यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने वाले गाड़ीचालकों का था, तो दूसरी तरफ थे पैरों पर दौड़ते हुए, हाथों और सीने की जोर से यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने वाले रिक्शाचालक। ऐसा प्रतीत होता था कि उनके उदर की सारी भूख एक ज्वलनशील ईंधन में परिवर्तित हो गयी थी जो जलकर उनकी छाती और हाथों को शक्ति प्रदान कर रही थी, ताकि वे यात्री को गंतव्य तक पहुंचाने की अपनी प्रतिबद्धता पूर्ण कर पाएं। 'विभाजित' इस अर्थ में भी कि एक ओर जहां गाड़ी वालों को अच्छी कमाई की उम्मीद थी, तो वहीं रिक्शेवाले सोच रहे थे कि वे अपनी क्षुधापूर्ति कैसे करेंगे?

वह इसी उधेड़बुन में पड़ा था कि सहसा कानों में एक आवाज गूंजी- "ओ रिक्शेवाले, बड़ा बाजार चलोगे?"

उसने नजर उठायी तो देखा कि एक 40-45 वर्ष की 'भद्र' महिला और किशोरवय लड़का छाता लिए खड़े थे।

"जी मेमसाब, चलूंगा।"

"कितने पैसे लोगे?" महिला ने पूछा। उसकी आवाज़ में खिन्नता झलक रही थी।

"पचास...", रिक्शेवाले ने उत्तर दिया। उसका वाक्य खत्म होने से पहले ही महिला बोल पड़ी – "क्या पचास रुपये? बीस रुपया किराया होता है। चलो बारिश हो रही है, तो दस रुपये और देती हूँ... तीस रुपये से एक पैसा ज्यादा नहीं दूंगी।" महिला ने सारी 'कैलकुलेशन' अपने दिमाग में पहले ही कर रखी थी और बस रिक्शेवाले के बोलने भर की देरी थी।

रिक्शेवाले ने एक बार आसमान को देखा और कुछ सोचते हुए सवारियों को बैठा लिया।

"पिज्जा की दुकान पर पांच मिनट के लिए रोक देना।" थोड़ी दूर चलने के बाद महिला ने कहा। जैसे किराए के तीस रुपये इस शर्त के अधीन थे। 'कंडीशन अप्लाई' के माफिक।

"भैया, दो चिकन पिज्जा पैक कर देना" – दुकान पर पहुंचकर महिला ने कहा।

इस दौरान महिला के साथ वाला लड़का पिज्जा की दुकान पर लगे शीशे के दरवाजे से बाहर देखने लगा। बाहर रिक्शेवाला खुद को बारिश से बचाने का असफल प्रयास कर रहा था। बीच-बीच में उसकी उड़ती-सी नजर उसी शीशे की दीवार पर अटक जाती थी, जिसपर वह दो चित्रों को स्पष्ट देख रहा था। पहला, अंदर बैठे लोगों के अच्छे नसीब को। दूसरा, अपनी भीगती निरीहता को जो उसकी किस्मत के खालीपन से बनी थी।

अचानक लड़का बोल उठा – "मम्मी, दो पिज्जा रोहन के लिए भी पैक करवा लेते हैं। बारिश हो रही है, हम दोनों साथ बैठकर खाएंगे, मज़ा आएगा।" रोहन का फ्लैट उनकी बिल्डिंग के दूसरे तल पर था और वह इस लड़के का मित्र था।

"ठीक है बेटा, पर तुम लोग जल्दी खा लेना। मुझे एक सहेली के घर जाना है और मुझे लौटने में थोड़ी देर हो जाएगी।" महिला ने हिदायती लहजे में कहा।

"मैडम, दो सौ नब्बे रुपये... कैरी बैग चाहिए? चार रुपये प्रति पीस।" – दुकानदार ने पिज्जा पैक करते हुए कहा।

"हां-हां दे दो।" – महिला ने उत्तर दिया।

"भैया मुझे यहीं उतार दो", एक बिल्डिंग के पास पहुंच कर महिला ने कहा, "और मेरे बेटे को अगले चौराहे पर स्टार अपार्टमेंट के सामने उतार देना।" महिला ने तीस रुपए रिक्शावाले की ओर बढ़ा दिये।

“लेकिन मेमसाब आपने तो इसी जगह की बात की थी।”

“हां-हां ठीक है, पर अगला चौराहा कितनी दूरी पर है?” यही कोई सौ-डेढ़ सौ मीटर। अब उतनी दूरी के लिए क्या 'एक्सट्रा चार्ज' लगेगा? बच्चा है, कैसे जाएगा? बारिश भी हो रही है।” – महिला की 'कैलकुलेशन' और 'ममता' से लबरेज़ तर्कों के सामने रिक्शेवाला क्रमशः निरुत्तर होता चला गया।

चूंकि मौसम और भी खराब होता जा रहा था, अतः लड़के को गंतव्य तक पहुँचा कर रिक्शेवाला सीधे अपने घर चला गया। रिक्शा को रखते हुए उसने देखा कि महिला द्वारा खरीदे गए पिज्जा के दो पैकेटों में से एक पैकेट रिक्शा में ही छूट गया था। उसने सोचा कि जाकर इसे लौटा दूं। अभी वो पैकेट को हाथ में पकड़े सोच ही रहा था कि अचानक उसका बेटा जो लगभग नौ-दस वर्ष का था, घर में से दौड़ता हुआ आया और बोला “बाबा, मेरे लिए लाये हो?” और अपने बाबा के उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर उसके हाथ से पैकेट छीन कर घर के भीतर भाग गया।

“हां-हां तुम्हारे लिए ही है।” रिक्शेवाले ने अपने शरीर को पोंछते हुए बेटे से कहा और बेटा जिसने बॉक्स पर अंग्रेजी में लिखे 'पिज्जा' शब्द को पढ़ लिया था, अब पिज्जा का एक टुकड़ा उसके मुंह में था। वह 'पिज्जा' शब्द से तो वाकिफ था, परंतु अब तक उसके स्वाद और कीमत से नहीं।

“बाबा, पिज्जा तो बहुत महंगा होगा न?” उसने ऐसे पूछा जैसे उसको इसका उत्तर मालूम हो।

“नहीं...”, रिक्शेवाले की बात उसके गले में ही अटक गयी। एक क्षण के लिए उसे यह चिंता सताने लगी कि कहीं बेटा रोज़ पिज्जा खाने की जिद न करने लगे। अगर ऐसा हुआ तो वह कैसे बंदोबस्त कर पाएगा? रोज-रोज तो 'चमत्कार' होते नहीं।

पर बेटा यह समझ चुका था कि अगर यह चीज़ इतनी महंगी नहीं होती तो उसके बाबा कम-से-कम दो-चार बार तो उसको इसका स्वाद चखा चुके होते। शायद गरीबी ने बहुत छोटी उम्र में ही उसे एक परिपक्व पुरुष में तब्दील कर दिया था। इसी परिपक्वता भरे अंदाज़ में उसने आगे कहा – “बाबा, ऐसी चीजों को खरीदने के बदले आप पैसे जमा कर एक मोटर से चलने वाली रिक्शा ले लो, जो चारों ओर से बंद रहती है। कम से कम बारिश में आपको भीगना तो नहीं पड़ेगा।”

रिक्शावाला अपने बेटे का चेहरा देखता रह गया...

दो दिन बाद वही महिला चौथे तल स्थित अपने फ्लैट के सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी। उसको दूसरे तल पर खेलता हुआ रोहन नज़र आया। “रोहन बेटा पिज्जा कैसा लगा?” महिला ने पूछा।

“कैसा पिज्जा आंटी?” रोहन ने मासूमियत से कहा।

“वही जिसे परसो आर्यन तुम्हारे लिए लाया था। बारिश हो रही थी, आर्यन कह रहा था कि वह तुम्हारे साथ पिज्जा खाएगा।” महिला ने संदेह भरे लहजे में कहा।

“लेकिन आंटी, मैं तो पिछले हफ्ते से ही अपने मामा के घर गया हुआ था, और ये बात आर्यन जानता था। मैं तो आज सुबह ही लौटा हूँ। फिर आर्यन मेरे लिए पिज्जा क्यों लाएगा?”

रोहन की बात सुनकर महिला के मन में हैरानी की एक लहर उठ आई। परंतु अगले ही क्षण हैरानी, गर्व में तब्दील हो गयी। छिपी हुई मानवता और एक मौन आदर्श से दीप्त आर्यन का चेहरा एकदम से उसकी आंखों में तैर गया।

उसने बारिश की रात के घटनाक्रम को पुनः अपने मन में दुहराया और उसे महसूस हुआ कि सामाजिक यथार्थ के समानान्तर एक पतली-सी पर सशक्त मौन रेखा खींचती चली आ रही है, आरंभ से... और जो कदाचित अनंत तक रहेगी... क्या है ये रेखा... शायद आदर्श...।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता ।

- आचार्य विनोभा भावे

भात

(महाश्वेता देवी द्वारा बांग्ला भाषा
में लिखित कहानी "भात" का हिन्दी अनुवाद)

प्रीति सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

बड़े घर की बड़ी बहू को उस आदमी की नजर शुरू से ही अच्छी नहीं लगी। पता नहीं कैसी उग्र नजर थी और कमर तक मैली उसकी लुंगी बहुत ही छोटी थी और उसका चेहरा जैसे जंगली लेकिन रसोईया महाराज ने कहा – भात खायेगा, काम करेगा।

-कहां से लाये हो इसे?

इस घर में सब कुछ बड़ी बुआ के नियम के मुताबिक होता है। बड़ी बुआ बड़ी बहू की बुआ सास हैं। बहुत ही विचित्र बात है कि उनका विवाह नहीं हुआ। सभी कहते हैं- इतना सम्पन्न होकर भी गृहस्थी चलाने के लिए उन लोगों ने लड़की का विवाह नही किया। जब बूढ़े गृहस्वामी की बहू मरी तब बुड्ढे गृहस्वामी की गृहस्थी कच्ची थी।

बड़े घर के लोग कहते हैं – उनका विवाह भगवान से हुआ है। वे देवता की सेविका हैं।

बड़े घर में एक शिव मंदिर भी है। इस रास्ते पर बने सभी घर बुड्ढे कर्ता के थे जिन्हें शिव – महेश्वर – त्रिलोचन – उमापति आदि शिव के ऐसे अनेक नाम दिये गए थे। वे दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्हीं के बाबत ये लोग खा कमा रहे हैं। बड़ी बूआ जी ने शायद कहा था – शिव जी मेरे पतिदेवता हैं। मनुष्य के साथ मेरा विवाह मत करो। कौन जाने यह बात सच है या झूठ। किन्तु बड़ी बुआ चिरकाल से इस गृहस्थी की रसोई संभालती आयी हैं; किरायेवाले मकान में मिस्त्री लगाती आयी हैं एवं उनके पिता की सेवा भी करती आयी हैं।

बड़ी बहू की बात सुनकर बड़ी बुआ बोली – कहां से लाये मतलब? बाढ़ में घर-गांव डूब गया। हमारी बासिनी का कोई परिचित है। वही लायी है।

बड़ी बहू बोली – देखने में कैसा है?

तुम लोग तो मन से दस पैसा नहीं दे सकती। इसलिए दफा चौदह के अनुसार काम करेगा, दो कौर खायेगा, ज्यादा तो नहीं है। चावल खरीदना नहीं है, बादा से चावल आता है। वो देने में भी अंगुली टेढ़ी हो जाती है।

बड़ी बहू चुप हो गई। पता नहीं आजकल बड़ी बुआ की बातें कैसी व्यंग्य से भरी रहती हैं। 'तुम लोग'! मतलब? बड़ी बुआ क्या किसी और घर की हैं?

बड़ी बुआ अंतिम कटाक्ष करती है। तुम्हारा ससुर ही तो मर रहा है इसलिए ही हवन यज्ञ किया जा रहा है, उसके लिए एक आदमी खायेगा

बड़ी बहू कुछ नहीं कहती। सारी बातें सही थी। उसके ससुर ही बीमार थे। बयासी वर्ष की आयु बहुत अधिक होती है। लेकिन ससुर बहुत तुनक मिजाजी थे। कैंसर था। बड़ी बहू को नहीं पता था कि कैंसर लीवर में भी होता है। बड़ी बहू भागती हुई गई।

आज बहुत काम है। मझली बहू चूल्हे के पास बैठी है। सास की मछली खाने की इच्छा वह समझ जाती है, इसलिए कई दिन से बड़ी इलिश मछली, प्रौढ़ पोना का पेट, चीतल मछली का कलेजा, अंडा सहित टेंगरा मछली, बड़ी भेटकी मछली की लाइन लगी है। विभिन्न प्रकार के पकवान बनाकर सास को खिलाना ही उसका काम है।

ससुर के कमरे में एक नर्स है। उस कमरे में अब बड़ी बहू जाती है। अगर वह थोड़ी देर बैठेगी तो नर्स जाकर चाय पी आयेगी। सझला लड़का विलायत में रहता है। उसके आने की कोई बात ही नहीं है। छोटा, मझला एवं बड़ा तीनों लड़के सो रहे हैं। इस घर के लड़के सुबह ग्यारह बजे से पहले नहीं उठते। इसीलिए वो लोग नौकरी नहीं कर सके। देवताओं के अठारह घर और बादा अंचल में असीम जमीन रहने पर काम भला कौन करता है?

ससुर के कमरे में बैठे-बैठे बड़ी बहू सोचती है, अगर ससुर नहीं रहे तो क्या होगा।

कैंसर, लीवर में कैंसर, पहले नहीं पता चला। जब पता चला तब बहुत देर हो चुकी थी। कुछ नहीं किया जा सकता था। बड़ी बहू सोचने लगी तब क्या चांद सूरज निकलेंगे। ससुर उसके लिए भगवान थे।

उनके लिए दही जमाकर उसमें इसबगोल मिलाकर शरबत बनाना पड़ता। भले ही सौ काम रहे, उनके खाना खाने आने के पांच मिनट पहले बड़ी बहू को रोटी – पूड़ी बनानी पड़ती। उनका बिस्तर बिछाना पड़ता, पैर दबाना पड़ता, दिनभर कितना काम करना पड़ता है। तो क्या अब वह सब नहीं करना पड़ेगा? कौन जाने?

डाक्टरों ने जवाब दे दिया है इसलिए ये यज्ञ हवन हो रहा है। छोटी बहू के पिता एक तांत्रिक लाये हैं। आधा-आधा मन बेल, शायुड़ा, पीपल, बरगद, इमली की लकड़ियां लायी गई। उन सब को बराबर-बराबर नाप से काटा गया। भजन नौकर काली बिल्ली के बाल लाने गया है। श्मशान से बालू, वेश्याओं के घर की हाथ

आर्शी ऐसे अनेक वस्तुओं की फरमाइश की गई।
इसलिए उस आदमी को लकड़ी काटने के लिए लाया गया। लगता है उसने कई दिनों से खाना नहीं खाया। बासिनी लायी है। बादा में रहता है फिर भी भात के लालच में इतना सब कुछ। ये भला कैसी बात हुई? बादा में चावल का अभाव है क्या? देखो पहले तल पर जाकर। कितने रकम के चावल डलिया पर डलिया तहकर सजाया गया है।
नर्स वापस आकर बैठ गयी। बड़ी बहू वहां से चली जाती है। आज खाना जल्दी बनाना होगा। तांत्रिक के हवन में बैठने से पहले। हवन कर तांत्रिक ससुर के प्राण उस हाथ आर्शी से पकड़ रखेंगे। तांत्रिक नीचे हॉल में बैठा है।
बड़ी बुआ बोली – नीचे आ गई बड़ी बहू? चावल तो निकाल दे।
-बस अभी निकाल रही हूं।
झिंगेशाल चावल के भात के साथ निरामिष दाल-सब्जी बनती है। रामशाल चावल के भात के साथ मछली बनती है। बड़े बाबू कनकपानी चावल के अलावा नहीं खाते। मझले और छोटे लड़के के लिए बारहों महीना पद्मजली चावल बनता है। रसोईया, नौकर, कामवाली बाइयों के लिए मोटा चपटा चावल बनता है।
बादा से आया आदमी लकड़ी काटते-काटते नजर उठाकर देखता है। आंखें आश्चर्य से बड़ी हो गई। हाँ, बासिनी इतने किस्म के चावल हैं?
-बाबू लोग खाते हैं।
-अरे! पांच किस्म का भात बनता है?
-बनेगा नहीं। बादा में इन लोगों की इतनी जमीन है। चावल इकट्ठा कर-कर के पहाड़ बना दिया है। बड़ी बुआ छिप-छिपकर बेच भी देती हैं। मैं ही वह चावल बेचने जाती हूँ।
बादा में इन लोगों का चावल होता है। बासिनी! उसी चावल में से एक मुट्ठी चावल दे दे। मुंह में डालकर पानी पी लूं। भूख के मारे पेट में कांटे चुभ रहे हैं। कई दिन से घर में भात नहीं खाया। दे बासिनी! तुझसे विनती करता हूँ।
-अरे अरे! क्या कर रहे हो उच्छब भैया। गांव के नाते तो भैया ही हुए। ऐसा क्यों कर रहे हो। बड़ी बुआ देख लेगी तो सर्वनाश हो जाएगा। मैं मौका देखकर दे जाऊंगी। तुम हाथ चलाते रहो। बाबा! सुन रहे हो, इन लोगों को क्या कहा जाए? एक आदमी ने कितने दिन से कुछ नहीं खाया है। यह नहीं कि पहले तनिक खाना खिला दें।
बासिनी चावल लेकर सिर हिलाते-हिलाते चली जाती है। उस आदमी का नाम उत्सव था। शुरू से ही वह उच्छव नाई नाम से परिचित था। पिछले कई दिनों से उसने सचमुच कुछ नहीं खाया था। उसकी किस्मत खराब है। बहुत ही खराब। जितने दिन खाने में खिचड़ी दी जा रही थी उतने दिन वह जा नहीं सका। ओ चन्नुनी की माँ! चुन्नुनी रे! तुम लोग काहे नहीं निकल रहो हो? – कहां हो।
वस्तुतः यह सब कहते हुए जब वह बहु-बेटा-बेटी को ढूंढ रहा था तब उसे समझ आ गया था। एक ओर भयंकर वर्षा, तूफान, बेटे-बेटी को चिपकाये हुए बहू शीत और डर से कांप रही थी। वह घर के बीच की खूंटी पकड़कर उसे नीचे की ओर दबा रही थी। बीच की खूंटी शराबी की तरह टल्ल थी और सेप्टीसेमिया के रोगी की तरह कांप रही थी। उच्छव भगवान! भगवान! बोल रहा था किन्तु ऐसे दुःसमय में भगवान भी कहीं छिप गये थे। उच्छव भगवान! भगवान! बोल रहा था। ऐसे समय में मातला नदी का पानी हवा के थपेड़े से छटपटा कर ऊपर आ गया। पानी बढ़ गया, पानी घट गया। उच्छव लोगों का संसार माटी में मिल गया।
सबेरे तबाही का आलम समझ में आया। उसके बाद कई दिनों तक घर के छज्जे के नीचे से कोई आहट पाने की आशा में उच्छव पागल हो गया। कौन कहां पागल है क्या उच्छव? साधन दास कहता उच्छव नहीं हैं न! साधन कहता है – तुझे भी तो खींच ले रहा था। पेड़ से अटक कर बच गया। उच्छव बोला – राकाड़ व चन्नुनी की मां! वह घर छोड़कर हिलना भी नहीं चाहती थी। इसके अलावा घर में टिन का एक डिब्बा था जिसका मुंह बंद था। उसमें निभुई उच्छव की जमीन के दर्खास्त की नकल थी। उच्छव नाई पुत्र हरिचरण नाई। वह डिब्बा कहां गया?
जो अब नहीं रहा, जो तूफान वर्षा, मातला नदी के गर्भ में चला गया उसी को खोज खोजकर उच्छव पागल हो रहा था। तभी तो वह खिचड़ी नहीं खा सका। जब उसे बोध हुआ तब खिचड़ी मिलनी बंद हो गयी थी। ड्राईडोल! चावल चबाकर पानी पीता। इस तरह कुछ दिन बीत गए। उसके बाद गांववालों ने कहा-जो लोग मरते हैं उनका श्राद्ध करना पड़ता है। ये काम करने के लिए वो लोग महानाम शतपथिक को बुलावा भेजे हैं। किन्तु महानाम अभी दो अन्य गांवों में श्राद्ध शांति की पूजा निपटाकर यहां आएंगे। गांव के अन्य लोग मछली-घोंघा-केकड़ा जो मिला पकड़ने लगे। उच्छव से साधन बोला – तुम अकेले कलकत्ता जाओगे इसलिए नाच क्यों रहे हो? सरकार घर बनाने का खर्चा देगी। सुन रहे हो?
उच्छव एकाएक सयाना बनते हुए बोला – ये बात भी है।
तूफान-वर्षा में किसको क्या हुआ, मां-भाई-बहन जीवित हैं या नहीं ये देखने बासिनी नहीं आ सकी। उसकी बहन और भावज कलकत्ता जा रही थी। वो लोग कुछ दिन ठेके पर काम करेंगी। उच्छव पहले भी एकबार वहां गया था। बासिनी जहां काम करती है, वह घर उसने बाहर से देखा था। घर में बहुत बड़ी दलान थी, मंदिर के गुम्बद पर लगा पीतल का त्रिशूल भी देखा था। यह बात गांव में सभी ने सुनी है कि बासिनी के मालिक के घर में इफरात भात है। उच्छव की एकाएक इच्छा हुई कि कलकत्ता जाकर खा-पी आये। यह इच्छा उसे क्यों हुई वह नहीं बता सकता। उपवास की एक रात में बहू-बेटा-बेटी, घर द्वार सब कुछ खो देने के बाद वह पता नहीं कैसा हो गया था। सिर में झनझनाहट रहती है, कोई बात ठीक से सोच समझ नहीं पाता। वह बहुत सोचता है कि अब ठीक से सोचना पड़ेगा।

ऐसा क्या हुआ जो अभी भी समझ नहीं आया है। सोचते ही उसे सबसे पहले ध्यान आया फूल लगने से पहले ही धान के पौधों से हरा रंग का गायब हो जाना। कार्तिक मास में ही धान का सूखकर खर हो जाना। यह देखकर उच्छव सर पकड़ कर बैठ गया था। सतीश मिस्त्री के हरकूल, पटनाई, मोटा, तीनों धान सूख गये। उच्छव सतीश बाबू की जमीन पर काम करके कई महीने जिंदा रहा।
ए उच्छव! मालिक का धान नष्ट हो जाता है तो तू क्यों रोता है?
रोऊंगा नहीं, साधन बाबू! रोऊंगा नहीं? लक्ष्मी घर न आकर सीधे श्मशान जा रही है और रोऊं भी नहीं? हम लोग क्या खाएंगे?
सोचते ही सबसे पहले याद आती है धान के खेत में लगी आग। इसके बाद याद आती है वह तूफानी भयावह रात। उसी सांझ उसने कई दिन बाद पेटभर खाया था नून और भुने हुए मिर्च के साथ उबले हुए हिंच (एक प्रकार का साग) और उबला हुआ घोंघा। वह ऐसा दिन था जिस दिन सभी उच्छवों ने भर पेट खाया था। खाते-खाते चन्नुनी की मां बोली थी कि भगवान की मनसा ठीक नहीं है जो लोग बाहर निकले, लगता है मारे गए।
उसके बाद ही याद आती है बीच की खूंटी जिसे माटी की ओर दबाकर चन्नुनी की मां पकड़ी है। मां वसुमति जैसे उस खूंटी को रखना नहीं चाहती, उखाड़ फेकना चाहती है। भगवान! भगवान! भगवान! उसके बाद बिजली कड़कने से जो थोड़ी सी रोशनी हुई उसमें दिखाई पड़ता है कि मतला नदी का फेनयुक्त जल उफान पर है। बस उसके बाद सब कुछ घालमेल होकर तहस-नहस हो गया। क्या हुआ। कहां गए सब। तुम कहां, हम कहां। उच्छव नाई पुत्र हरिचरण नाई/कागज सहित डिब्बा कहां है? बहुत ही सुन्दर डिब्बा था। चन्नुनी लोगों को भगवान यदि जिन्दा रखते तो उच्छव की छाती में आज सौ हाथी का बल होता। तब उस डिब्बे को लेकर सभी भीख मांगने जाते। सतीशबाबू का नाती उस डिब्बे में बेबी फूड खाता था। उच्छव उनसे वह डिब्बा मांगकर लाया था। ऐसा डिब्बा रहने से जरूरत पड़ने पर कुछ उबाला जा सकता था। बहुत ही चमत्कारी डिब्बा था।
-क्या हुआ! हाथ चलाओ बच्चा। उधर हवन शुरू होने जा रहा है और तू खड़ा होकर लकड़ियां देख रहा है?
बड़ी बुआ गुस्से से तमतमा गई।
- बहुत भूख लगी है मां।
- लो सुन लो बात! भात बनने पर अभी खाना नहीं मिलेगा। तांत्रिक का नया नियम है, सब खाना पकाकर रखो, हवन के बाद खाना। तुम हाथ चलाओ।
उच्छव फिर लकड़ी काटने लगा। हर टुकड़ा डेढ़ हाथ लम्बा होना चाहिए। वह धारदार कटारी से लकड़ी काटता है। पकते भात की खुशबू उसे व्याकुल करती है। इधर-उधर झांकते हुए बासिनी एक टोकरी बोझाई साग लेकर दलान में धोने आयी। एक दोना झट से उसके हाथ में देती हुई बोली – सत्तु खाकर रास्ते के नल से पानी पी लो। देर ना करो। ये पिसाचों का घर है। कैसा है जानते हो भैया! गरीबों की जान इनके लिए सस्ती है।
-कोई मर रहा है क्या बासिनी?
-टकला बुड्ढा। घर का मालिक। मरेगा नहीं? दारू रे लड़का रे, लड़की रे। वो मोटी जो हवन की तैयारी कर रही है वह उनकी खास नौकरानी है। मालिक के मरने के बाद उसे लात मार कर न निकाले तो मेरा नाम बासिनी नहीं। टकला बुड्ढा मर रहा है इसीलिए हवन हो रहा है।
सत्तु लेकर उच्छव बाहर चला गया। बाप रे! इतनी तरकारी, इतना चावल, इतनी मछली, यह तो एक यज्ञ ही है। सब शायद बादा की दौलत है। वह कौन सा बादा है? उच्छव के बादा में केवल घोंघा, गेंड़ी, अरवी साग होता है। उच्छव जरा सा सत्तु खाकर मिठाई की दुकान से नौहड़ (कुल्हड़) मांगकर पानी पीता है। सत्तु पेट में जाते ही पेट फूलकर कप्पा हो गया। कुछ भी हो कम से कम पेट की ज्वाला तो शांत हो। किन्तु क्या सागर में ओस पड़ती है? उच्छव को कुछ महसूस ही नहीं हुआ। वह लौट आता है।
-कहां गये थे?
-तनी बाहर गए थे मां।
लकड़ी काटने पर हवन, हवन होने पर भात! उच्छव जल्दी-जल्दी हाथ चलाता है।
मझली बहू ने चीखते हुई पूछा रसोई घर में पोंछा लगाई है बासिनी? सारा खाना वहीं रखना होगा।
बासिनी बोली – पोछ दिया है।
बड़ी बहू अकड़ती हुई बोली - सब हो गया है?
-मछलीवाली रसोई में ही सारा खाना बना लिया।
ये सारी बाते सुनकर उच्छव को सांत्वना मिलती है। वह भात खायेगा, भात। पहले भात खायेगा। भात का स्वाद लेगा। आते समय गांववाले बोले थे- जब कलकत्ता जा ही रहा है तो कालीघाट में उन लोगों का श्राद्ध कर देना। वो लोग आपदा में मरे हैं। हां यह भी करेगा उच्छव। महानाम शतपथिक तो आये नहीं। आयेंगे तो नदी किनारे श्राद्ध होगा।
उच्छव कालीघाट में श्राद्ध करेगा। सतीश बाबू ने कहा था – उच्छव की मति कहीं भ्रष्ट तो नहीं हो गयी? आपदा में स्त्री, बेटा-बेटी मरने पर आदमी पागल हो जाता है। लेकिन उच्छव तो भात-भात कर रहा है।
आप क्या समझोगे सतीश बाबू। नदी किनारे भी नहीं रहते। माटी के घर में भी नहीं रहते। पक्का घर क्या आंधी पानी में गिरता है? तुम धान और चावल भी पक्के घर में रखते हो। चोर डाकू भी नहीं ले सकते। पूरे देश में आये दुर्भिक्ष में भी तुम्हारे घर भात बनता है। लेकिन उच्छव को खाने के लिए भात नहीं दिया। तुझे अकेले

कैसे देता? यह भगवान की मार है। इस चोट से क्या तुझे बचा सकता हूं? इसीलिए तुझे भात नहीं दिया, देश में भात कहां है। कीड़े से धान नष्ट हो गये। इसीलिए उच्छव के आधे पेट से पूरे पेट का उपवास शुरू हो गया। पेट में भात नहीं है इसीलिए उच्छव भी प्रेत बन गया। भात खाने से वह आदमी बनेगा। तभी तो स्त्री-लड़की-लड़के के लिए रोयेगा। दुःख तो उसे हुआ ही नहीं। वह केवल पागलों की तरह स्त्री-लड़की को कई दिनों तक पुकारता रहा। तभी उच्छव प्रेत बन गया। आदमी होता तो ठीक समझता कि पानी के बहाव में कितने आदमी बह गये, कितनी गाय, कितनी भैंस बह गयी तो चन्नुनी की मां कैसे बचती। उच्छव लकड़ी काटना बंद कर देता है। वह भात की लालच में अढ़ाई मन लकड़ी काटता है। जबकि शरीर में क्षमता नहीं थी।

लकड़ी के पांच गट्ठर बनाकर दलान में रख आता है। लकड़ी के बुरादे और टुकड़े सब टोकरी में उठाकर आंगन में झाड़ू लगा देता है। इसके बाद बड़ी बुआ को देखकर दुलार से कहता है मां बाहर जाकर बैठू?

बड़ी बुआ कोई जवाब ही नहीं देती क्योंकि तांत्रिक अचानक "उं ही ठं ठं भों भों रोग श्रृणू श्रृणू" बोलकर गरजते हुए रोग को पकड़ता है, काली बिल्ली के रोएं से रोग को बांधकर फेंक देता है और हवन शुरू करता है। इधर नर्स ऊपर से नीचे आकर बोली, डॉक्टर को कॉल कीजिए। बड़ी, मझली और छोटी तीनों बहू उनींदी आँखों एवं निर्विकार भाव से हवनवाले कमरे से बाहर आ गयी। बासिनी उच्छव से बोली – तुम बाहर जाकर बैठो भैया। मंतर न बोलता तो अच्छा होता। जैसे ही मंत्र शुरू हुआ वैसे ही गृहस्वामी के शरीर में स्पंदन हुआ। मालिक के देह की बीमारी चरमरा कर बाहर आ गयी। नहाओगे तो नहा लो क्यों?

-अभी नहीं नहाऊंगा। सिर पर पानी पड़ते ही पेट में अकुलाहट शुरू हो जाती है।

उच्छव बाहर आकर शिव मंदिर के चबूतरे पर बैठ गया। कैसा मंदिर कैसा चबूतरा। यह सब शायद बादा की दौलत है। यह बादा कहां है?

उच्छव ने बहुत दिनों से भात नहीं खाया है। भात खायेगा तो शक्ति मिलेगी और तब उच्छव उस बादा को खोज निकालेगा। उच्छव की तरह इस देश में और बहुत लोग हैं। वह उन्हें भी चलने को कहेगा।

मंदिर के चबूतरे पर तीन लड़के ताश खेल रहे थे। उन लोगों ने कहा कि बुड्ढे को बचाने के लिए हवन हो रहा है।

बेकार!

-क्या बेकार?

-बचकर वह कितने दिन जीवित रहेगा। सौ साल? सब बेकार!

उच्छव आंख बंद कर लेता है। ऐसे यज्ञ के बाद भी बूढ़ा मालिक अधिक दिन जीवित नहीं रहेगा। क्या काण्ड है। उस रात अगर मातला नदी उन्मत् होकर शराबी की तरह उफान पर न होती तो आज उच्छव की स्त्री, चन्नुनी, छोटा बेटा बहुत दिन जीवित रहते। उच्छव की आँख से आंसू लुढ़क गये—आज भात खायेगा। इसी आशा से प्रेत उच्छव शायद आदमी बन गया। स्त्री, लड़की, छोटे लड़के की बात याद आते ही आंखों में आंसू आ गये ऐसे में एकाएक भात ही सब कुछ। बूढ़ी दादी कहा करती थी कि अन्न लक्ष्मी, अन्न लक्ष्मी, अन्न ही लक्ष्मी है। बूढ़ी दादी पूछा करती – खाना बना की नहीं बिटिया।

-क्यों, रो क्यों रहे हो?

-क्या हमसे पूछ रहे हैं बाबू?

आबाद से आया हूं बाबू। वर्षा-तूफान में सब नाश हो गया, घर के आदमी भी!

ताश खेल रहे लड़के असमंजस में पड़ गये। उनमें से उम्र में सबसे बड़े लड़के ने कहा – ठीक है भाई सो जाओ।

उच्छव सचमुच सो गया। वह बहुत देर तक सोता रहा। बहुत देर तक। अन्त में पता नहीं किसके पैर की ठोकर से उसकी नींद खुली।

इश! यह तो सांझ हो गई। किन्तु वह आदमी उसको क्यों ठेल रहा है?

-उठो उठो, कौन हो तुम?

-बाबू--- हम---

-चोरी के इरादे से पड़े हो?

-नहीं बाबू, इस घर में काम कर रहा था।

-उठो उठो।

उच्छव उठ गया किन्तु वह बहुत घबड़ा जाता है। सड़क पर बहुत सी गाड़ियां खड़ी थी। छोटे-छोटे दल में लोग खड़े थे।

-क्या हुआ बाबू?

कोई उसकी बात का जवाब नहीं देता। उच्छव घर के अंदर जाता है। अंदर आते ही बड़ी बुआ का विलाप सुनता है, -"तुम्हारे छोटे संबंधी कैसा तांत्रिक लाये। यज्ञ शुरू हुआ और तुम्हारे प्राण भी गये। तुम जो एकान्त में चले जाओगे, यह कौन जानता था? बोलो भैया! तुम्हें तो अपनी उम्र के अट्ठानबे वर्ष तक जीवित रहना था।"

उच्छव बासिनी को नहीं देख सका, केवल दिखती है कर्म काण्ड की तैयारी। जब तक कीर्तन दल न आये तब तक नहीं निकलना है। जाने कौन बोला।

कीर्तन दल! बड़का बेटवा क्या बोल रहे हो। छोटी और बड़ी बहनों को आ जाने दीजिए। बड़ी बुआ बोली, "कोई चंदन घिस रहा है कि नहीं?"

-खटिया पर रखे रुपये किसने लिए?

कोई सामान की सूची दो, खील, फूल, धोती। सब बस्तर..................

उच्छव चारदीवारी से चिपक कर खड़ा रहा। कितना समय बीत गया, कितना कुछ होता रहा।

मस्त खटिया लायी गयी। रातों रात सब करना होगा। रातों रात काम खत्म करना होगा। नहीं तो दोष लगेगा।

बहुत जोड़-तोड़ किया गया। लड़कियां भी आकर रोयीं। हवन यज्ञ करने पर भी बूढ़े मालिक के प्राण नहीं रहे, इसके लिए तांत्रिक थोड़ा भी हीन भाव से ग्रसित नहीं हुआ। उसने अपने बचने का मार्ग ढूंढ निकाला। फलतः बड़ी बुआ चिल्लाकर बोली-तीनों लड़के जो हवन छोड़कर उठ गये थे।

इन सब कामों में बाधा पड़ने से क्या कोई बचेगा। इस बात की चर्चा-परिचर्चा से घर में बहुत गर्मागर्मी रही। शोक की तो कोई बात नहीं रही। घर में चूल्हा नहीं जलेगा। रास्ते की दुकान से चाय आती रही। अंत में रात एक बजे के बाद बूढ़ा कर्ता बम्बईया खटिया पर सोकर नाचते-नाचते चला गया। पेशेवर और दक्ष शव वाहक लोग आधा दौड़ लगाते हुए गये। इसलिए कीर्तन दल भी दौड़ने के लिए बाध्य हुआ। बड़ी बुआ जी बोली बासिनी पूरा खाना रास्ते में फेंक कर जाना। घर-द्वार सब मुक्त करो। तुम सब भी जाओ बहू, खड़ी क्यों हो?

उच्छव के सिर पर जो बादल छाये थे वह छंट गये। वह समझ जाता है कि वो लोग पूरा भात फेंक देंगे।

बासिनी बोली, - जरा पकड़ो भैया।

-पकड़ता हूं।

उच्छव की बुद्धि अब स्थिर हो गई। वह जानता है उसे क्या करना है।

-मुझे भारी वाला दो।

मोटे चावल के भात की बड़ी हंडी लेकर वह बोला – दूर फेंक कर आता हूं।

-हां-हां, नहीं तो कुत्ते छितरा देंगे, सबेरे किसे फटकार मिलेगी – रसोईया बोला।

बाहर निकलकर उच्छव दनदनाता हुआ आगे बढ़ता रहा। थोड़ी दूर चलने के बाद वह दौड़ने लगा। भात, बादा का भात अब उसके हाथ में है। रास्ते में फेंक देंगे? कौवा, कुत्ता खायेंगे?

भैया! त्रस्त बासिनी दौड़ती हुई आयी, अशूच घर का भात नहीं खाना चाहिए।

-खाना नहीं चाहिए? तुम भी क्या ब्राह्मण हो गई हो?

-ए भैया विनती करती हूँ।

उच्छव मुंह फेर कर खड़ा हो जाता है। उसकी आंखें बादा अंचल के भूखे घड़ियाल जैसी हिंसक हो गयी। दांत निकालकर वह घड़ियाल की तरह हिंसक भंगिमा बना लेता है। बासिनी चौंक कर खड़ी हो जाती है।

उच्छव दौड़ता रहा। प्रायः एक श्वास में वह स्टेशन पहुंच गया।

वह बैठकर जल्दी जल्दी भात खाने लगा। भात की हंडी में हाथ डालते ही भात के स्पर्श से उसे स्वर्ग सुख की अनुभूति हुई। ऐसा सुख चन्नुनी की मां उसे कभी नहीं दे सकी। खाते-खाते उसे क्या हुआ। मुंह घुसाकर खाने लगा। भात, केवल भात। बादा का भात। बादा का भात खाने से ही वह एक दिन असली बादा खोज निकालेगा। कई और बादा हैं। उस बादा की खोज उच्छव जरूर तू भी कर लेगा। और भात खा लेता हूं। चन्नुनी रे! तू भी खा, चन्नुनी की मां तू भी खा, छोटा लड़का तू भी खा, मेरे अंदर प्रवेश कर तुम लोग भी खाओ। आह! अब पानी पी लेता हूं, पानी! उसके बाद और भात खाऊंगा। भोर की ट्रेन से सीधा क्यानिंग जाऊंगा। पेट में भात जाते ही अब समझ रहा हूं कि क्यानिंग होते हुए देश गांव जाना है।

उच्छव कसकर हंडी पकड़कर उसे सिर छुआकर सो जाता है।

पीतल की हंडी चुराने के अपराध में लोगों ने सबेरे उच्छव को वहीं पकड़ा।

पेट में भात का भार लेकर उच्छव सो रहा था। उसकी नींद नहीं टूटी। वे लोग उच्छव को मारते-मारते थाना ले गये। असली बादा की खोज उच्छव और नहीं कर सका। वह बादा बड़े घर में रह जाता है अचल होकर।

जिन्दगी नहीं बल्कि एक अच्छी जिन्दगी को महत्ता देनी चाहिए।

- सुकरात

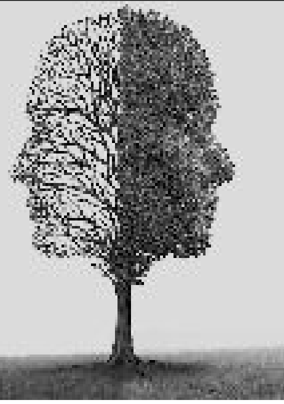

मानसिकता

सुदेश कुमारी
वरिष्ठ अनुवादक

हर इंसान का जीवन विभिन्न पहलुओं से भरा है। कभी धूप कभी छांव जीवन में लगी ही रहती है। अधिकतर इंसान जो अपने जीवन में नहीं कर पाते उसकी इच्छा वे अपने बच्चों से रखते हैं। कुछ भाग्यशाली लोगों की इच्छा पूरी भी होती है। कुछ मां-बाप अपने बच्चों को उस इच्छित रुप में नहीं देख पाते जिसकी वे इच्छा रखते हैं। कुछ मां-बाप सब कुछ होते हुए भी अपने बच्चों को सब कुछ देने का सामर्थ्य रखते हैं परंतु भाग्य के हाथों विवश हो जाते हैं। ऐसे मां-बाप की श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनके बच्चे मानसिक रुप से अक्षम होते हैं। बात उठती है कि जो व्यक्ति मानसिक रुप से अक्षम होते हुए भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता वह दिव्यांग है या वो जो पूर्णतया शारीरिक एवं मानसिक रुप से सक्षम होते हुए भी भीख मांगने में संकोच नहीं करते।

मैं एक बार चण्डीगढ़ सैक्टर 22 की मार्केट में शॉपिंग करने गई थी वहां मैंने एक 20-22 साल के नौजवान को खड़े देखा। उसके दोंनो बाजुओं में कपड़े के थैले – जो कि कुछ सामान से भरे थे, लटक रहे थे। वह युवक अच्छी तरह से खड़ा होने में सक्षम नहीं था फिर भी वह इतना वजन टांग कर खड़ा था। यह देखकर अनायास ही मेरे कदम उसकी ओर बढ़ गए। पास जाकर देखा तो उसने अपने हाथों में भी सौंफ, चूर्ण वाली गोलियों एवं अलग-अलग पापड़ के पैकेट पकड़े हुए थे। उसकी जीजिविषा को देखकर मेरा मन उससे सामान खरीदने के लिए इच्छुक हुआ। मेरे पूछने पर बहुत मुश्किल से बोलकर जब उसने दाम बताया तो मेरा मस्तिष्क उसके प्रति सम्मान से झुक गया क्योंकि वह शारीरिक ही नहीं मानसिक रुप से भी कमजोर था। वह अपनी अक्षमता को हराने का बीड़ा उठा चुका था जिसमें एक समाज सेवी संस्था उसकी सहायता कर रही है। सामान खरीदने के बाद उस युवक ने लड़खड़ाती जुबान में ही सही परंतु पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मुझे थैंक्यू भी कहा।

उपर्युक्त घटना ने मुझे यह सीख दी कि अगर आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान हो तो इंसान मानसिक अथवा शारीरिक रुप से अक्षम होते हुए भी एक सक्षम जीवन जी सकता है। सक्षमता या अक्षमता इंसान के विचारों में होती है जिसे हम केवल अपनी सकारात्मक मानसिकता से हरा सकते हैं।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

- सुमित्रानंदन पंत

संसार की ओर 'लौटने' की यात्रा

प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

विगत सोमवार को मैंने अपने बच्चे की पहली छाया देखी – अंजु के गर्भ में। डाक्टर के निर्देश पर अनिवार्य अल्ट्रासाउंड के लिये गए थे। गर्भावस्था के दौरान गर्भस्थ शिशु की विकास स्थिति जानने के लिए डाक्टर अल्ट्रासाउंड करवाते हैं। इसमें शिशु का लिंग नहीं बताया जाता है। शायद ये मेरे जीवन का सबसे सुखद क्षण था। पिता बनने की प्रक्रिया का साक्षी होना – ये मुझे वरदान-सा लगा। क्या हम सुख की प्राप्ति से पूर्व भी सुखी हो सकते हैं? लगा जैसे मैं आते हुए सुख के मार्ग में समय-सा उपस्थित हूँ – अदृश्य मौन साक्षी।

अंजु के गर्भ में नन्हा जीवन..... कोमल और नन्हा – संसार की सर्वाधिक सुंदर कृति। संभवतः ये उस नन्हे शिशु के सौंदर्य का ही प्रस्फुटन है कि अंजु हर दिन अधिकाधिक सुंदर हुई जाती है। मां और उसके गर्भ में उपस्थित संतान का परस्पर आदान-प्रदान..... संतान का अपनी माँ को पहला प्रतिदान और अंतिम भी.... ऐसा 'अंतिम' जो सदा 'पहला' बनकर अंत तक रहेगा।

मशीन की तरंगे गर्भ मे उतरी तो उस कोमल शिशु ने हरकत की। तरंगों से उत्पन्न प्रकाश की ओर उसका नन्हा मुखड़ा धीमे-से उठा – एक प्रकार की ताल में। उस समय मुझे वो एक दार्शनिक-सा दिखा। एक अबोध और शांत दार्शनिक – जो मात्र एक ही बात जानता है कि निर्विचार रहना, मन को खाली रखना, कुछ न सोचना ही ज्ञान-प्राप्ति का सरलतम मार्ग है। हर शिशु अपनी मां के गर्भ में इसी 'बुद्ध-रूप' में अवस्थित रहता है।

फिर लगा जैसे उसने अंगड़ाई ली – जैसे अपने कोमल मूंदे नेत्रों के भीतर उसे पता है कि हम दोनों उसे देख रहे हैं और उसने अपने मृदुल नन्हे मौन में हमें निश्चिंत रहने को कहा... या शायद अपनी मां को ही, मुझे अभी वो नहीं पहचानता। उस समय मैं इस सत्य का भी साक्षी हुआ कि मुझे पिता बनने में अभी समय लगेगा, जबकि अंजु मां बन चुकी है। इसी कारण अंजु की दृष्टि में आश्चर्य के स्थान पर मातृत्व का नम-सा आनंद था, जबकि मैं पूर्णतः आश्चर्यचकित था। वो अपलक शिशु को ही देख रही थी, जबकि मैं दोनों को देख रहा था।

अंत में उस नन्हे सुकोमल 'बुद्ध' के हृदय के स्वर सुने जिसे मैं 'धड़कन' इसलिए नहीं कह सकता कि 'धड़कन' से जुड़ी जो कोमल स्वर की कल्पना मन में होती है, वो उसमें नहीं थी। उस कोमल शिशु, मेरे शिशु, के हृदय के स्वर कुछ ऐसे थे – 'धुस्श SSS धुस्श SSS धुस्श SSS।' मुझे बचपन में रेवाड़ी रेलवे स्टेशन पर सुनी हुई 'स्टीम इंजन' के चालू होने के स्वरों की स्मृति हो आयी जिनमें मेरे नाना जी – नानी जी की मौन उपस्थिति के स्वर, उनकी भाषा और भावों की मौन अभिव्यक्ति समाहित रहती थी। उस समय, ठीक उसी समय इस स्मृति का उठना क्या यह एक संकेत है! क्या इससे दुर्लभ वरदान हो सकता है कि हमारे पूर्वज हमारे आत्मीय पूर्वज हमारी संतान बनकर लौटे!!

निस्संदेह, मां के गर्भ में अवस्थित वो नन्हा शिशु एक यात्रा में है... लेकिन ये यात्रा संसार में 'आने' की यात्रा नहीं है, बल्कि यह संसार की ओर 'लौटने' की यात्रा है।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

17 वां लोक सभा चुनाव 2019

ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

भारतीय लोकतंत्र का महापर्व – लोक सभा चुनाव। इस चुनाव को महापर्व कहा जाता है क्योंकि आम जनता अपने मताधिकार का प्रयोग कर अपना प्रतिनिधि चुन कर संसद में लाती है, इस उम्मीद एवं विश्वास के साथ कि उनकी समस्याओं एवं बुनियादी जरूरतों को उनके प्रतिनिधि सदन पटल पर ध्यान में लाएंगे। यह उम्मीद भी रहती है कि केन्द्र में गठित सरकार देश के सर्वांगीण विकास व अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता को प्राथमिकता देगी एवं उसके अनुरूप काम करेगी।

भारतीय चुनाव आयोग (ई.सी.आई.) द्वारा 17वां लोक सभा चुनाव-2019 देश के विभिन्न राज्यों में अप्रैल से मई माह के बीच 7 (सात) चरणों में कराया गया। पश्चिम बंगाल में भी राज्य चुनाव आयोग द्वारा 42 संसदीय क्षेत्रों में 11 अप्रैल 2019 से 19 मई 2019 तक 07 (सात) चरणों में चुनाव सम्पन्न कराया गया। किसी भी चुनाव को शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से कराने के लिए चुनाव कर्मियों की आवश्यकता होती है। इसके लिए जिला चुनाव आयोग द्वारा विभिन्न विभागों, कार्यालयों, संस्थानों से कर्मियों की सूची मांगी जाती है। हमारे कार्यालय से भी कर्मियों की सूची आयोग कार्यालय को भेज दी गयी थी। मार्च माह में चुनाव ड्यूटी हेतु कार्यालय कर्मियों की प्रथम सूची आयी जिसमें इस बार पुरुष कर्मियों के साथ कुछ महिला कर्मियों का भी नाम आया था। यह अप्रत्याशित था। उनमें से कुछ महिलाओं के बच्चे छोटे थे और कुछ की अन्य पारिवारिक समस्याएं थी। सभी नामित महिलाओं ने आयोग कार्यालय में चुनाव ड्यूटी से छूट के लिए आवेदन किया, जिसे आयोग द्वारा स्वीकार कर लिया गया। चुनाव आयोग से दूसरी सूची आयी। इसमें भी कुछ महिला कर्मियों का नाम था। किसी को पीठासीन अधिकारी के तौर पर, किसी को प्रथम, द्वितीय, तृतीय मतदान अधिकारी की ड्यूटी हेतु नामित किया गया था। जितने भी कर्मियों को नामित किया गया था उनको प्रशिक्षण भी दिया गया। जिन महिला कर्मियों का नाम आया था, उन्होंने प्रशिक्षण तो ले लिया किंतु वे चिन्तित थी कि उन्हें चुनाव ड्यूटी करनी होगी और जिनका नाम नहीं आया था वे भी चिंतित थी कि कहीं उनका भी नाम न आ जाए।

अब अन्तिम सूची की बारी थी जिसमें कार्यालय के अधिकाधिक कर्मियों को नामित किया गया था। उस सूची में भी कुछ महिला कर्मियों को नामित किया गया था जिसमें मेरा नाम भी था। सभी को माइक्रो-ऑबजर्वर की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। इस बार भी सभी महिला कर्मियों ने चुनाव ड्यूटी से छूट हेतु चुनाव आयोग कार्यालय में आवेदन दिया किन्तु आयोग ने अब आवेदनों पर विचार करने से स्पष्टतः मना कर दिया। बाद में सिर्फ उन्हीं आवेदनों पर विचार करने को तैयार हुआ जहां आवेदक के बच्चे 2 वर्ष से छोटे हैं या जो शारीरिक रूप से अस्वस्थ हैं, लेकिन उन्हें आयोग द्वारा गठित मेडिकल बोर्ड से जांच कराकर चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा। इस तरह एक-दो को छोड़कर किसी को भी ड्यूटी से छूट नहीं मिली। अंततः सभी नामित महिला कर्मी मानसिक रूप से चुनाव ड्यूटी के लिए तैयार हो गयी।

5 मई को माइक्रो-ऑब्जर्वर का प्रशिक्षण **'शिशिर मंच'** में दो सत्रों में दिया गया। चुनाव प्रक्रिया संबंधी सभी जानकारियाँ दी गयी। जिला चुनाव अधिकारी ने कहा कि महिला कर्मियों को महिला बूथ में ही ड्यूटी दी जाएगी जिसमें सिर्फ महिला कर्मी ही होंगी। साथ ही उम्मीद जतायी कि महिला कर्मी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाएंगी। प्रशिक्षण के पश्चात् कार्यालय में सभी नामित चुनाव कर्मी आपस में चुनाव ड्यूटी संबंधी जानकारियाँ बांट रही थीं।

19 मई को 7वां व अन्तिम चरण का मतदान पश्चिम बंगाल के उत्तरी कोलकाता एवं दक्षिणी कोलकाता के संसदीय क्षेत्र में होना था। 18 मई 2019 चुनाव सामग्री एकत्र करने का दिन था, उसके लिए दो वितरण केन्द्र (डी.सी.) बनाए गये थे। एक रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय और दूसरा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इंडोर स्टेडियम। हमारे दल को रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय केन्द्र से चुनाव सामग्री एवं कागजात प्राप्त करने थे। सुबह 9.00 बजे रिपोर्टिंग का समय था। मैं 10.00 बजे तक वहां पहुंच गयी। वहाँ जाकर पता चला कि मेरी ड्यूटी मानिकतला संसदीय क्षेत्र में है। अन्य दिनों की अपेक्षा उस दिन गर्मी चरम पर थी।

बावजूद इसके पुरूष कर्मी के साथ महिला कर्मी भी उत्साहपूर्वक चुनाव सामग्री प्राप्त करके अन्य जानकारियाँ ले रही थी। लगभग शाम 5.45 बजे हमें वितरण केन्द्र से बस द्वारा मतदान केन्द्र लाया गया। वहां पहुंचकर हम सभी ने मतदान केन्द्र की व्यवस्था का जायजा लिया एवं एक जगह एकत्र होकर एक-दूसरे से परिचय साझा किया। मतदान केन्द्र में 6 बूथ बनाये गये थे। इस तरह मुझे माइक्रो-ऑब्जर्वर के रूप में 6 बूथों की निगरानी एवं रिपोर्टिंग करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। कुछ समय पश्चात कुछ कर्मियों ने सबके लिए केन्द्र के बाहर से चाय इत्यादि की व्यवस्था की। जलपान के बाद सभी अपने-अपने बूथ कक्ष को व्यवस्थित करने में लग गये कि ई.वी.एम., वी.वी.पैट आदि कहां रखे जाएंगे, पीठासीन अधिकारी, चुनाव अधिकारी 1,2,3 कहां बैठेंगे, पोलिंग एजेंट कहां बैठेंगे, इत्यादि। इसके बाद सभी कागजातों को ठीक करने में लग गयीं। सभी ने रात्रि भोजन मतदान केन्द्र के बाहर कर लिया। रात्रि भोजन के बाद देर रात तक चुनाव संबंधी सभी कागजातों को ठीक कर लिया गया।

19 मई को सभी सुबह 4.00 बजे उठ गई और 5.00 बजे तक तैयार हो गयीं। सभी 6 बूथों में निर्धारित समय अर्थात 6.00 बजे मॉक-पोल शुरू किया गया किन्तु एक बूथ को छोड़कर बाकी सब में कुछ न कुछ खामिंया थी जैसे किसी के वी.वी.पैट में तो किसी के ई.वी.एम. में तकनीकी खराबी पायी गयी। तुरंत सेक्टर ऑफिसर को खबर दी गयी। 1 घंटे के अंदर तीन वी.वी.पैट को ठीक कराया गया एवं दो की जगह नई मशीन प्रतिस्थापित की गई। इस तरह पुनः मॉक-पोल कराने के बाद मतदान शुरू किया गया। मतदान शुरू होने में देर होने के कारण कुछ मतदाताओं में असंतोष था किन्तु समझाने के बाद वे सामान्य हो गये। मुझे देखकर एक बुजुर्ग पोलिंग एजेंट ने कहा – "दीदी मोनी भालो कोरे रिपोटिंग कोरबेन" अर्थात दीदी अच्छे से रिपोटिंग कीजिएगा। मैंने हंसकर सिर हिला लिया। इस तरह मतदान शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से चलता रहा। किसी भी तरह की अप्रिय घटना नहीं घटी जिसका सबको डर था।

17वां लोक सभा चुनाव कुछ खास था। पहली बार अपने मताधिकार का उपयोग करने वाले युवक-युवतियों एवं आम मतदाता में भी काफी उत्साह देखा गया। चिलचिलाती धूप एवं प्रचंड गर्मी के बावजूद मतदाता लम्बी कतारों में घंटों खड़े रहे जिनमें 18 वर्ष के युवक से लेकर 98 वर्ष तक की आयु वाले बुजुर्ग मतदाता भी शामिल थे। मतदान निर्धारित समय पर अर्थात शाम 6.00 बजे समाप्त हुआ। इस तरह सभी 6 बूथों में मतदान शांतिपूर्ण ही रहा। मतदान समाप्ति के बाद सभी 6 बूथ के चुनाव कर्मियों ने अपनी चुनाव सामग्री एवं सभी कागजात का अच्छी तरह वेष्टन कर लिया। इस दौरान मैंने भी अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली। लगभग 8.00 बजे चुनाव कर्मियों को बस द्वारा मतदान केन्द्र से प्राप्ति केन्द्र (आर.सी.) नेताजी सुभाष चन्द्र बोस इंडोर स्टेडियम तक पहुंचाया गया, जहां एक ही समय अधिकाधिक चुनाव-कर्मियों के दलों के पहुंचने से काफी भीड़ थी। सभी चुनाव सामग्री एवं रिपोर्ट जमा करने के लिये अपने-अपने काउंटर की खोज में लगे थे। मैं भी माइक्रो-आब्जर्वरों के लिए बने काउंटर की खोज कर रही थी। इसी भागदौड़ में मेरे धक्के से तीन युवक अपनी-अपनी वी.वी.पैट मशीन के उपर गिर पड़े। मैं "सॉरी" कहकर आगे बढ़ गयी। उन्होंने भी उस क्षण परिस्थिति को देखते हुए चुप रहना ही उचित समझा होगा। आधे घंटे की मशक्कत के बाद मुझे अपना काउंटर मिला। जब मैं रिपोर्ट जमा कर स्टेडियम से बाहर निकली तो रात्रि के 10.30 बज चुके थे। रात्रि 11.45 बजे मैं अपने घर पहुंची। घर पहुंचने के बाद मैंने ऊपर वाले का धन्यवाद किया कि चुनाव ड्यूटी खत्म कर सकुशल घर आ गयी।

चुनाव कर्मियों को वितरण केन्द्र से मतदान केन्द्र तक एवं मतदान खत्म होने पर मतदान केन्द्र से प्राप्ति केन्द्र (आर.सी.) तक पहुंचाने की व्यवस्था तो होती है किन्तु आर.सी. से उनके गंतव्य तक पहुंचाने की कोई उचित व्यवस्था नहीं होती है जिससे उन्हें देर रात्रि में अपने घर पहुंचने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। चुनाव आयोग को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

17वें लोक सभा चुनाव 2019 में पुरूष चुनाव कर्मी के साथ महिला कर्मी ने भी पूरी ईमानदारी एवं उत्साहपूर्वक अपनी जिम्मेदारी निभायी। किन्तु चुनाव कर्मियों को चुनाव ड्यूटी के दौरान सभी बुनियादी सुविधाएं मुहैया करायी जानी चाहिए। साथ ही साथ इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था भी प्रदान करनी चाहिए। आवागमन की भी उचित व्यवस्था हो, ताकि मतदान के बाद देर रात्रि वे सकुशल अपने गंतव्य तक पहुंच सके। महिला कर्मियों के मामले में तो इस तरह की व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

इस तरह महिला चुनाव कर्मियों ने 17वें लोक सभा चुनाव में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर नारी सशक्तिकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया।

जब तक किसी काम को किया नहीं जाता, तब तक वह असंभव लगता है।

- नेल्सन मंडेला

पर्यावरण संकट

अमरेश कुमार
लेखापरीक्षक

विगत वर्षों से हो रहे तापमान में इजाफा, वर्षा में लगातार कमी, ग्लोबलवार्मिंग का खतरा, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं सुखाड़न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है। प्राकृतिक आपदाओं ने अपना कहर बरपाना शुरु कर दिया है। वह पूरे सृष्टि को मौत के गाल में ले जाने को आतुर है। शुक्र है उन वैज्ञानिक उपकरणों का जो पहले ही हमें उसकी आहट दे देते हैं और हमरि लीफकैंप का सहारा लेते हैं। पर उन बेचारों जीव-जन्तुओं का क्या? अभी फोनी तूफान का जख्म भरा भी न था कि मुम्बई की बारिश बड़ा घाव दे गई।

आज हम इस दहलीज पर खड़े है कि हम शुद्ध हवा और शुद्ध पानी के भी मोहताज हो गये हैं। वह दिन दूर नहीं जब पानी की तरह हवा भी बोतलों में मिला करेगी।

हमें बेहद खेद है कि पूरे विश्व में बड़े-बड़े राष्ट्र परमाणु परीक्षण में लगे हैं और अपने कर्मों का ठीकरा दूसरों पर फोड़ना चाहते हैं, उनमें वैमन्ष्यता की भावना इस कदर घर कर गयी है कि मानवतावादी विचाराधारा का गला घोंट दिया जाता है।

यकीनन यह मसला काफी सोचनीय है, जिसके समाधान हेतु सम्पूर्ण मानवजाति को ही पूरी संजीदगी से सोचना होगा न कि कोई अलाद्दीन के चिराग का जिन आकर बोलेगा "क्या हुक्म है मेरे आका"?

हमें स्वयं ही ऐसी समस्या के समाधान के लिए कोई ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

मारग्रेट थेचर के शब्दों में "किसी भी पीढ़ी का इस पृथ्वी पर एकाधिकार नहीं है हम सभी यहाँ जीवन व्यय के लिए है जिसकी कीमत भी हमें चुकानी है" अगर ऐसे कुछ विद्वानों की माने तो हम अपनी अगली पीढ़ी को क्या भेंट देने वाले है? वही दूषित नदियां असहनीय गरमी, दूषित वायुमंडल या फिर पर्यावरण प्रदूषण से होनी वाली असाध्य बीमारियां?

हम सब असहनीय गरमी से बचने के लिए 15 दिन, 1 महीना हिल स्टेशन पर वनवास चले जाते हैं पर उन जीव-जन्तुओं का क्या जो प्लेन या ट्रेन में नहीं चढ़ सकते? कोई उनके बारे में क्यों नहीं सोचता? जो जीव जगत का एक श्रृंखला है और यह श्रृंखला भी संकट में नजर आ रहा है। कई प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं।

हालांकि पर्यावरण संकट से उबरने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय प्रयास किये जा रहें हैं फिर भी बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों पर हुक्म जताकर खुद नाभकीय परीक्षण में लिप्त हैं। अभी भी कार्बन उत्सर्जन में अमेरीका का बड़ा योगदान है लेकिन यहां तो अपना स्वार्थ ही सर्वोपरि है। परमाणु परीक्षणन करने की संधि को ताक पर रख कई राष्ट्र परीक्षण में लगे हैं।

हालांकि भारत में भी कई प्रयास सराहनीय है जैसे- दिल्ली में ओड-ईवेन फार्मूला, दिवाली में पटाखा के इस्तेमाल में कमी, पूजा की मूर्तियों को नदियों में नहीं बहाना, बिहार में 15 साल से पुरानी गाड़ियों पर पाबंदी-ऐसे कई उदाहरण हैं। लेकिन फिर भी कुछ असामाजिकतत्व इसे साम्प्रदायिक रंग से रंगना चाहते हैं। उनका कहना है कि हम पटाखा हिंदू त्योहारों में ही कम क्यों इस्तेमाल करें?

अब उन्हें कौन समझाये? एक कहावत है न "जब नाश मनुष्य पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है"

यह मत भूलो कि धरती तुम्हारे पैरों को महसूस कर के खुश होती है और हवा तुम्हारे बालों से खेलना चाहती है।

\- **खलील जिब्रान**

प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी

प्रभात कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति कभी अपने नियम नहीं तोड़ती परन्तु हम और आप तोड़ते है। दुनिया में इंसान एकमात्र ऐसा प्राणी है जो हरे-भरे वृक्षों को काटता है, उससे कागज बनाता है, और उसी कागज पर लिखता है-"पेड़ बचाओ"।

मनुष्य और समस्त जीव-जन्तु प्रकृति की गोद में सदियों से फूलते-फलते रहे हैं। वस्तुतः जीव-जन्तुओं और मनुष्यों का प्रकृति से बहुत गहरा संबंध रहा है। दोनों एक-दूसरे के पूरक है। विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं का विकास प्रकृति की गोद में एक शिशु की भांति हुआ है। और तब से मनुष्य के महत्वपूर्ण संबंध भी स्थापित हुए, परन्तु कालान्तर में हमारी प्रकृति से दूरी बढ़ती गई।

मत्स्यपुराण में प्रकृति की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि "एक वृक्ष सौ पुत्रों के समान है। किन्तु जैसे-जैसे इसका अतिक्रमण हो रहा है, प्रकृति की विध्वंसकारी और विघटनकारी रूप उभर कर सामने आ रहे हैं। कभी विषैली वायु तो कही दूषित जल, स्थल मानो कंक्रीट का कंकाल बन गया है जैसे। भूकम्प, सुनामी और तूफान आदि विध्वंसकारी शक्तियां प्रबल हो चली हैं।

हमारे देश, भारत में प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख से 20 लाख हेक्टेयर वन नष्ट हो रहे है जबकि प्रतिवर्ष वन लगाने की अधिकतम सीमा 3 लाख 26 हजार प्रति हेक्टेयर है। यही हाल रहा तो आगामी कुछ वर्षो में धरती वन-विहीन हो जाएगी। हमारे पड़ोसी देशों में जहां जितने वृक्ष काटे जाते है उससे कही अधिक वृक्ष लगाये जाते हैं। यक्ष प्रश्न, यह है कि कही हम विकास की होड़ में पृथ्वी का विनाश तो नहीं कर रहे हैं।

प्रकृति के प्रति हमारी और आप सभी की यह जिम्मेदारी बनती है कि प्रकृति की रक्षा करें और अधिक से अधिक पेड़ लगाने हेतु लोगों को जागरूक बनाए।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, परन्तु विडम्बना यह है कि विकसित देश जैसे कनाडा में प्रति व्यक्ति वृक्षों की संख्या 8953 है वही दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश चीन में प्रति व्यक्ति वृक्षों की संख्या मात्र 28 है। भारत के भू-भाग का लगभग 24 प्रतिशत हिस्सा वनों और पेड़ो से घिरा है। हालांकि यह विश्व के कुल भू-भाग का मात्र 2.4 प्रतिशत है।

भारत के कुछ राज्यों में वनों की अवस्था और भी दयनीय है जैसे पंजाब में वृक्षों का प्रतिशत 3.52, हरियाणा में 3.59, राजस्थान में 4.7, उत्तर प्रदेश में 5.96 प्रतिशत और बिहार में 7.74 प्रतिशत है। उपरोक्त राज्यों की पर्यावरणीय स्थिति का अध्ययन करें तो स्थिति बहुत भयावह है। जहां इन राज्यों का तापमान दिन-प्रति दिन बढ़ रहा है, वही मानसून (वर्षा) ना के बराबर है। जल संकट तो आए दिन अखबार की सुर्खिया बन चुकी है। रोग-प्रकोप का कूचक्र भी हम पर हावी हो चुका है। आज से लगभग 100 साल पहले भारत में किसी ने यह कल्पना भी नहीं की होगी, कि हम और आप सभी बंद बोतलों में जल बाजार से खरीद कर पीयेंगे। आज जल के हजारों ब्रांड बाजार में उपलब्ध हैं। यह सिलसिला यही समाप्त नहीं होता है अगर हम बात जीवन की सबसे महत्वपूर्ण तत्व की करें तो वह तत्व "प्राण वायु" (ऑक्सीजन) है। आश्चर्यजनक बात यह है कि आज बाजारों में ऑक्सीजन की सुन्दर-सुन्दर बंद बोतलें, जल की बोतलें की भांति अपना पाव पसार रही है और लोगों ने इसे खरीदना शुरू भी कर दिया है।

प्रकृति हमें बार-बार चेतावनी दे रही है परन्तु हम सभी बधिर और मूक बने हुए है। प्रश्न यह है कि हम कब तक यूंही प्राकृतिक तत्वों का कृत्रिम (अप्राकृतिक) रूपान्तरण करते रहेंगे। यदि यही स्थिति रही तो सम्पूर्ण पृथ्वी का विनाश निश्चित है और हम सभी इसके जिम्मेबार होंगे।

यदि हम सभी मिलकर निम्नलिखित संकल्प करें और सम्पूर्ण सृष्टि को अपना मित्र समझें तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण धरती स्वर्ग समान प्रतीत होगी।

संकल्पः-

1) अधिक से अधिक वृक्षों को लगाना ही नहीं, अपितु उसका पालन-पोषण करना।
2) वन कानूनों का स्वयं पालन करना और लोगों को इसके प्रति जागरूक बनाना।
3) प्रत्येक नये व पुराने स्कूल, कॉलेजों, सड़कों, औद्योगिक संस्थानों, शॉपिंग मॉलों, अस्पतालों - प्रायः सभी स्थानों पर वृक्षों का 'सुरक्षा कवच बनाना' अनिवार्य करना।
4) प्रत्येक मनुष्य, यदि संभव हो तो अपने जन्मदिन के शुभ अवसर पर कम से कम एक वृक्ष लगाता है तो हमारे दृष्टिकोण से यह वृक्ष उस मनुष्य और समस्त जीव-जन्तुओं के लिए सर्वोत्तम उपहार होगा। और कभी समाप्त न होने वाली ऐसी प्रथा (श्रृंखला) का निर्माण होगा, जो सम्पूर्ण जगत का पोषण करेगा।
5) वृक्षों के संरक्षण एवं पोषण संबंधी विषयों को प्राथमिक-माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए ताकि बच्चे जो देश का भविष्य हैं, इसके प्रति सजग, सचेत और संवेदनशील रहें।
6) सूखा की त्रासदी देखते हुए वर्षा के जल को संग्रहित (संचयन) कर वृक्षों का पोषण कर सकते हैं।
7) कागज से निर्मित वस्तुएं जैसे किताबों का विनिमय कर लाखो पेड़ों को बचा सकते हैं।

इस प्रकार हमारा छोटा-छोटा प्रयास ही आगे चल कर सम्पूर्ण पृथ्वी का उत्थान करेगा। अब मैं एक छोटी सी कविता के माध्यम से अपनी लेखनी को विश्राम देना चाहूंगा।

धरती का अधिकार वृक्ष है
प्राणवाय दे रहे सभी को,
ऐसा परम उदार वृक्ष है।

जीव-जन्तु की भूख मिटाता
जीव-जन्तु की प्यास बुझाता
धरती का श्रृंगार वृक्ष है।

मत काटो शीतल छांव को
सुन्दर-सुन्दर फल-फूलों से सज्जित
समस्त जीव जगत का आधार वृक्ष है।

चीजों के प्रकाश में सामने आओ, प्रकृति को अपना शिक्षक बनने दो।

- विलियम वर्डस्वर्थ

द्वेष

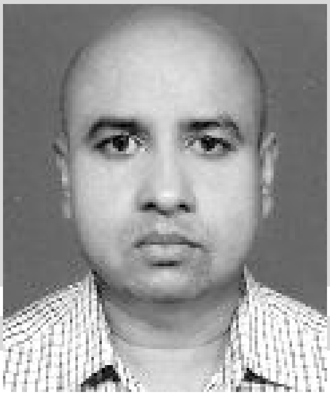

ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

क्रोध की अग्नि में
क्यों जल रहा ऐसे।
मन में क्या संताप है
जो पल रहा ऐसे।।

तान भृकुटी को तू
कब तक रह पायेगा।
चीर आसमां को
यूं कब तक रक्त बहायेगा।।

चीखते हैं, नर कंकाल और मरघट
इन पिशाची आत्माओं को,
तू कब तक सह पायेगा,
तोड़ कर दूसरों का दिल
कब तक दीप जलायेगा।।

रक्त रंजित हाथों से
तू कैसे नीड़ बनायेगा,
जल जायेगा तू भी
इस क्रोध के दावानल में
रह जाएगी राख तेरी
तू खाक में मिल जाएगा।।

घृणा, घृणा से नहीं प्रेम से खत्म होती है, यह शाश्वत सत्य है।
- भगवान बुद्ध

हर्ष

गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सुबह की आपाधापी
नींद खुलते ही
जिम्मेदारियों को ढ़ोती एक स्त्री
जो मां कहलाती है
जिसका सोना और जागना तय होता है
अपने बच्चे के सोने और जागने पर।

सुबह तैयार कर
उसे स्कूल भेजती माँ
अपने मन को भी भेजती है उसके साथ
ऑफिस की फाइलों में उलझी मां का
बीच-बीच में ख्याल जाता है अपने बच्चे पर।

शाम के वक्त
जब ऑफिस से घर जा रही होती है मां
तो दिखती है उसके कदमों में तीव्रता
दिन भर रहती है व्याकुल
अपने बच्चे को बाहों में भर लेने को

डोर – बेल की आवाज से
पहचान लेता है बच्चा
कि मम्मी आ गई ऑफिस से
दरवाजा खुलते ही कूद पड़ता है बच्चा मां की गोद में
कलेजे से लगाकर उसे
मां दूर करती है अपनी थकान
सुकून का पल
और हर्ष की अनगिनत
रेखाएं खींच आती है
माँ के चेहरे पर।

हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है।
- जॉर्ज ग्रियर्सन

स्नेहलता
दीदी - अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

पुरुषार्थ

हम हैं शावक शेरों के
जगत-जननी के हम मनुज।
ब्रह्मास्त्र हैं ब्रह्मा के
रश्मि-रवि के हम हैं सुत।।

तम में जो ज्योति जगा दें
तमसा को भी वासर बना दें।
कोई खलल न पैदा होने पाए
विभीषण को आओ अभी मिटा दें।।

हम बली भुजा भुजंग के
चण्डिका भी धात्री हमारी।
कोई दुर्जन न बनने पाए
आओ दंभ की बलि चढ़ा दें।।

न भेद-भाव रहे जगती में,
अवनि-अंबर में अंतर मिटा दें।
हम आत्मज अंबा के
हर असंभव को संभव बना दें।।

यद्दपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते है और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

एक दूजे के लिए

सुरजित घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक पति था एक पत्नी थी
कहानी है यह मोहब्बत की,
पति बहुत लालची था सिर्फ पैसे के बारे में सोचता था
पत्नी बड़ी रोमांटिक थी, गानों के सहारे बोलती थी।

पत्नी:- दिल है कि मानता नहीं
पति:- तेरे बाप का दिया स्कूटर चलता नहीं
पत्नी:- हम तुमसे प्यार ना करते तो तुम क्या करते।
पति:- शायद दूसरी शादी में दहेज ज्यादा मिलते
पत्नी:- आशिक बनाया (3)--- आपने
पति:- तुझे पागलखाने क्यों नही भेजा तेरे बाप ने
पत्नी:- रूप सुहाना लगता है, चाँद पुराना लगता है, तेरे आगे ओ जानम
पति:- शॉपिंग मॉल जाती हो, रेस्तरां में खाती हो तेरे पीछे पैसे खतम।
पत्नी:- बाहों में चले आओ हमसे सनम क्या परदा
पति:- क्या पान बना रखा है, ना चूना ना जर्दा
पत्नी:- अगर जिंदगी हो, तेरे संग हो
अगर मौत हो, तो वो हो तुमसे पहले
पति:- बैंक अकाउन्ट को जल्दी से "आइदर और सर्वाइवर" कर ले
पत्नी:- बदतमीज दिल (3) माने ना माने ना
पति:- गाना गाती है,
खाना खाती है,
खाना पकाना जाने ना जाने ना
पत्नी:- तू मेरी जिंदगी है, तू ही प्यार
तू ही चाहत तू ही आशिकी है
पति:- तू मेरी सासू की बेटी,
तू ही सी.एल. तू ही ई.एल.
करता हूँ तेरी छुट्टी।

हिन्दी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है।
- बाबूराम सक्सेना

संजय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बदलेगी ये दुनिया

बदलेगी ये दुनिया
सोच बदल के देखो
ये लक्ष्य होंगे पूरे
जरा मेहनत करके देखो।

गरीबी में जियो
मगर ख्वाब अमीरी के देखो
सारे ख्वाब होंगे पूरे
पहले ख्वाब देखो।

जिंदगी सुधर जाएगी
जरा इंसान बन के देखो
जीना मरना सबको है
जरा महान बन कर देखो।

झूठ बहुत बोले होंगे अबतक
कभी सच बोल कर देखो
सफल जरूर होंगे एक दिन
एक कदम बढ़ाकर देखो।

खुद में वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।
- महात्मा गांधी

हम अबला नहीं

ओलिभ बारा

पर्यवेक्षक

धरती पर तो क्या,
हमने आसमां पर भी
अपना शौर्य दिखाया है।

एवरेस्ट की ऊंची चोटी पर,
बन बछेंद्री-अरुणिमा
हमने तिरंगा लहराया है।

आत्मविश्वास का पंख लगा,
बन अवनि, भावना, मोहाना
हमने ऊंचे गगन में
लड़ाकू विमान उड़ाया है।

सागर के गहरे सीने में,
बन आरती साहा
हमने गोता लगाया है।

अंतरिक्ष की अनोखी सतह पर,
बन कल्पना चावला
हमने पांव जमा
देश का मान बढ़ाया है।

दुराचार का नाश करके,
बन किरण बेदी
हमने सबक सिखाया है।

विस्थापितों को न्याय दिलाने
बन मेधा पाटकर
अथक आंदोलन चलाया है।

देश की रक्षा हेतु
बन निर्मला सीतारमण
सही वक्त पर सही फैसले ले
हमने अपना कर्तव्य निभाया है।

विश्व मंच पर देश-हित में,
बन इन्दिरा – प्रतिभा
हमने देश का नेतृत्व किया है।

बन मिताली – झूलन,
मेरीकॉम – पी.टी.उषा,
साइना – दीपिका
हमने देश को पदक दिलाया है।

बात चाहे हो
बस-ट्रेन-ऑटो चालक की
या बाइक-टैक्सी की,
या हो फाइटर विमान चालक की
हमने अपना प्रभुत्व दर्शाया है।

पंचायत से संसद तक का
जमीन की गहराई से आकाश
की ऊंचाईयों तक का
हमने लंबा सफर तय किया है।

अपने किन-किन रूपों-नामों का
करें वर्णन हम,
वैसे तो पूरे घर की कमान
हाथ में है हमारे।

पर क्षेत्र शिक्षा का हो या स्वास्थ्य का
मंच साहित्य का हो या मनोरंजन का
जगत खेल का हो या उद्योग का
बात चाहे हो राजनीति की
या हो देश की सुरक्षा की
हमने इन क्षेत्रों में भी
अपना परचम लहराया है।

जब भी जरूरत हो हमारी
अपनी मातृभूमि की सुरक्षा हेतु
पहन वर्दी सेना की
जंग में शामिल होने से भी
हिचकेंगे न कभी हम

देश-रक्षा का अपना फर्ज समझकर
किसी भी 'सर्जिकल स्ट्राइक' का
हिस्सा बनना भी
स्वीकार करेंगे हम।

प्रण लेते हैं हम सब नारी
हो सशक्त हर नारी-अत्याचार का
विरोध करेंगे हम

हो सुशिक्षित
अपने अधिकार-हक को
हासिल करेंगे हम
अब कभी भी न कहना हमें 'अबला'
हैं 'सबल' हम
और करते हैं हम
सबका भला।

जब दिलों को जीतने की कला आ गई तब समझना कामयाब हो तुम।

- अज्ञात

ये राहें

अरुण विकास
कनिष्ठ अनुवादक

ये राहें चारों तरफ
काली-सफेद
प्रतिरूप लगती हैं
उसपर तैरती हजारों-लाखों निगाहों की।
हमारे पैर, गाड़ियाँ
रौंदती हैं उसके सीने को
सहती है वह सब
अपने साथ हो रहे हर उत्पीड़न को
थूक देते हैं लोग उसके चेहरे पर
और बढ़ जाते हैं आगे,
यह सोचे बगैर
कि तुमने उसके अस्तित्व को ललकारा है।

चारों तरफ की ये राहें
अपने में समेटे हुई है
आपकी, मेरी जिंदगी के पलों को
बाँह थामे चलते हो तुम
उसके किनारे
और उसी किनारे
तृप्त करती है वह तुम्हें
बदले में चाहती है बस इतना
कि उसे साफ रखो तुम अपने जैसा।

तुम अपने को रोज धोते हो न?
और मुग्ध हो जाते हो अपनी ही सुंदरता पर
क्या कभी उसकी सुंदरता पर रीझे हो तुम?
ब्लैक एंड व्हाइट का मेल लाजवाब है उसकी।

उसके बगल में जो हाई-कोर्ट बसा है
मालूम है, उसके जज भी पहनते हैं
काला – सफेद!!
मिलता है वहां न्याय सबों को
और ये राहें मांगती रह जाती हैं – दया की भीख
कि तुम मुझे लताड़ो पर सजाओ भी।

हिन्दी सरल भाषा है। इसे अनायास सीखकर लोग अपना काम निकाल लेते हैं।
- जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

प्रशांत कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

द्रौपदी के शब्द

द्रौपदी के शब्द –
'अंधे का बेटा अंधा'
लोग कहते हैं, वे हमेशा से कहते आए हैं
द्रौपदी के इन शब्दों ने महाभारत करवा दिया

क्या सच में ?
या ये कहकर छुपा दिया जाता है
दुर्योधन को
उसकी समस्त चारित्रिक कुरूपता और रुग्ण मानसिकता के साथ
जहरीला शकुनि, घुन्ना धृतराष्ट्र भी छिप जाता है तब
और उनके पीछे छिप जाता है आदमी का घटियापन
उसका बदबूदार अहंकार
गली हुई ईर्ष्या
दूसरे का अधिकार निगल जाने की बेशर्मी
खुद आदमी

वो दो बेशर्म हाथ भी छिपा दिये जाते हैं
जो निर्वस्त्र की जा रही द्रौपदी के आतंकित दायरे के भीतर
उसके वस्त्र पर बहुत लंपटता से चिपके थे

हर उस आदमी के हैं वो दो हाथ
जो चाहता है कि काश वो दो हाथ सृष्टि के अंत तक कृष्ण का मुकाबला करते
और जीत जाते
उनके भीतर तिलमिलाहट है
कि द्रौपदी की श्रद्धा के आगे उस दिन आदमी हार गया
वो अफसोस से भरे खड़े हैं
दुर्योधन, शकुनि और दुशासन के साथ
इसलिए कहते हैं कि द्रौपदी के शब्दों ने महाभारत करवा दिया

ये कहकर वो द्रौपदी को निर्वस्त्र किए जाने के लिए सिर्फ द्रौपदी को ही दोषी ठहराते हैं
कुछ ऐसी विचारशून्यता के साथ कि उस अश्लील, संस्कृति में कीड़ा लग गई सभा में
जैसे स्वयं द्रौपदी ही अपने वस्त्र उतारने को उतावली थी
कि वो दुर्योधन से कहे अपने शब्दों पर पछतावे से भरी थी

द्यूत, युधिष्ठिर, दुर्योधन तो बहाना मात्र थे
क्या कोई जानता है कि
महाभारत का युद्ध द्रौपदी के शब्दों के
तेरह वर्षों बाद कुरुक्षेत्र पहुंचा था
तुरंत नहीं

कि द्रौपदी को युद्ध की जरूरत नहीं थी
प्रतिशोध के लिए उसका श्राप ही काफी था
लेकिन गांधारी ने रोक लिया था द्रौपदी को
आदेश देकर नहीं, भीख मांगकर
शब्दों के प्रति ऐसी वीभत्स प्रतिक्रिया का ये लघु प्रकरण
उस दिन वहीं उस निर्लज्ज सभा में अपना अंत पा जाता
युद्ध तक नहीं पहुंचता

कि पांडव अपनी समस्त वीरता के बावजूद
बहुत हास्यास्पद जिद्दी ढंग से आदर्शवादिता ओढ़े हुए थे
युद्ध उनके दर्शन में मात्र एक विचार था
जो उनको सिर्फ उत्तेजित करके रह जाता था

कि कृष्ण अंत तक युद्ध टालने का प्रयास करते रहे थे

लेकिन दोनों से अविच्छेद्य द्रौपदी को
एक की आदर्शवादिता और दूसरे के प्रयास से बाहर रखा जाता है
क्या ये साजिश नहीं है
सारा ठीकरा स्त्री के सिर फोड़ देने की

द्रौपदी के शब्द युद्ध का कारण नहीं थे
वो हो ही नहीं सकते थे
गली-मोहल्लों के झगड़ों के लिए होता है 'कारण'
लेकिन युद्ध के लिए तो "भूमिका" की मांग होती है
वर्षों की कुंठा और अतृप्त इच्छाओं के गले हुए फोड़े से रिसती पस से लिखी भूमिका
जो जीने का भ्रम पाल रही किसी मृत देह से ही रिसती है
जिसके बहुत से नाम होते हैं – धृतराष्ट्र, शकुनि, दुर्योधन
और आदमी

जीत उसी की होती है जिसमें शौर्य, धैर्य, साहस, सत्य और धर्म होता है।

- हजारी प्रसाद द्विवेदी

भास्कर सेनगुप्ता
लेखापरीक्षक

अव्यक्त

यह अकेला जीवन, बेरंगीन स्वप्न,
धूल के बीच व्यस्त जीवन, अस्तित्व खोज रहा मन,
एक तरफ फैला हुआ सुख, दूसरी ओर अंतहीन दुःख,
दुनिया की कुंजी किसके हाथ में,
कौन जाने भगवान या कोई और सर्वशक्तिमान
जो इंसान चाहता है वह नहीं मिलता,
जो मिलता है वह नहीं चाहता।

केवल परिवर्तन ही स्थायी है यह नहीं समझता,
फिर भी लड़ाई, लड़ाई, लड़ाई
खुद पर विश्वास करके युद्ध अभी भी जारी
मित्र रूकना है मना,
ना हार है, ना जीत है, बस खुद पर विश्वास है
मन में लोहा गलता, तन के ऊपर यही लोहा ढ़लता,
भीतर बाहर चारों प्रहर जिसके फौलादी इरादा पलता,
नही गिरता, उठता निरंतर चलता, इतिहास
अव्यक्त यह जिन्दगी हर एक को शायद,
यही है कहता, यही है कहता।

भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिन्दी है।
- नलिनविलोचन शर्मा

जिंदगीः एक परिचय

श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

लूटा दी किसी ने दौलत-शोहरत
ज़िंदगी का मज़ाक बनाने में।
लुटाई किसी ने कमाई अपनी
मिल-बैठ मयखाने में ।
उजाड़ दी किसी ने आशियाँ
घर किसी और का बसाने में।
जलाया किसी ने घर अपना
महफिल किसी का सजाने में।
जलाए कितने अरमां किसी ने
थोथे रिश्तों को बचाने में।
गंवाए किसी ने रिश्ते-नाते
ख्वाब एक सजाने में।
गंवायी किसी ने जिंदगी अपनी
इंसानी मुर्दों को जगाने में।
गंवाया किसी ने वक़्त अपना
बेकार के सबक सीखने में।
चलायी किसी ने गोलियां
रख कर किसी को निशाने में।
बहाया किसी ने खून अपना
कितनी जान बचाने में।
इंसानी वेश में भेड़िय
दिखे कितने जमाने में ।
लगाई किसी ने ताकत सारी
ऐसे नीच को बचाने में।
गिर गए कितने गिरने वाले
एक चलते को गिराने में।
कितने यहाँ बढ़ाते हाथ
किसी गिरते को उठाने में?

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते लेकिन अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

अमरेश कुमार

लेखापरीक्षक

क्योंकि इंसान भी बदलते हैं

पहले, बच्चे खेतों में कंचे खेला करते थे,
आज, वीडियो गेम खेला करते हैं।
पहले, नन्हे सम्राट, चंपक, चंदा-मामा पढ़ा करते थे,
आज, टिक-टॉक, वाट्सअप चलाया करते है।
क्योंकि इंसान भी बदलते हैं।

पहले, बच्चे माता-पिता, दादा-दादी के साथ रहा करते थे,
आज, उन्हें पहचान तक नहीं पाते हैं।
पहले, माता-पिता की सेवा करना धर्म माना जाता था,
आज, नौकरी के लिए अमेरीका मे बस जाते हैं।
क्योंकि इंसान भी बदलते हैं।

पहले, लोग पैदल या बैलगाड़ी से चला करते थे,
आज मर्सडीज या प्लेन से उड़ा करते हैं।
पहले, लोग साधारण खाकर सौ साल जीया करते थे
आज, चाइनीज खाकर भी जल्दी मर जाते हैं।
क्योंकि इंसान भी बदलते हैं।

पहले बच्चे गुरु के प्रति सम्मान का भाव रखते थे
आज वह भाव कम हो गया, लगता है।
पहले, बच्चे गुरू को पिता से भी ऊंचा दर्जा देते थे,
आज, पिता के साथ मिलकर गुरु की पिटाई तक कर देते हैं
क्योंकि इंसान भी बदलते हैं।

पहले, लोग चौपाल लगाकर दोस्तों से बात करते थे,
आज, फ्रेंडशिप ऐप पर दोस्त ढूँढा करते हैं।
पहले, लोग घरों में अतिथि देवों भवः लिखा करते थें,
आज, कुत्तों से सावधान लिखा करते हैं
क्योंकि इंसान भी बदलते हैं।

हिन्दी विश्व की महान भाषा है।

- राहुल सांकृत्यायन

आई.पी.एल.

श्रेयस कुमार मोवार
पुत्र - श्री मनोज कुमार मोवार,
कल्याण अधिकारी

आई.पी.एल. का सीजन आया,
मनोरंजन का मौसम छाया।

कोलकाता में बहार आया,
खिलाड़ियों में नव जीवन आया।

इडेन गार्डन सजी है प्यारी,
रात में भी फैली उजियारी।

टिकट के लिए मारा मारी,
स्टेडियम में भीड़ भारी।

रंग-बिरंगे ड्रेसों में खिलाड़ी,
देश-विदेश की हस्तियाँ सारी।

दर्शक देते रह-रह तारी,
नाच रही चियर लीडर्स प्यारी।

कोलकाता-पंजाब में जंग जारी,
गेल-नारायण में हो रही लड़ाई।

आखिरी बॉल पर सबकी सांसे अटकी,
छक्केमार, कोलकाता ने बाजी पलटी।

आई पी एल खेल में हुआ चमत्कार,
विजयी टीम का जय-जयकार।

खुशियों से झूम रहे चहुंओर,
अति आनंद से दर्शक सराबोर।

आई पी एल का नशा छाया
बूढ़े-बच्चे सभी के मन भाया।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

- कमलापति त्रिपाठी

विशाल मंडल
पुत्र- विराट वरुण मंडल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रहरी

मैं जगा रहूंगा रात-दिन,
चाहे धूप हो या बरसात हो
चाहे तूफान आए या पूस की ठंडी रात हो।

मैं खड़ा रहूंगा डटकर सरहद पर सीना ताने,
चाहे गोलियों की बौछार हो
चाहे भूख और प्यास हो।

अपने वतन की खातिर मैं
हर दर्द हंसकर सह लूंगा,
अपने बदन के खून का हर एक कतरा
अपने वतन के नाम कर दूंगा।

आंखों में रेत भी चली जाए कभी,
वादा है, मेरी पलकें नहीं झपकेंगी कभी
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,
बंदूक मेरे हाथ से नहीं गिरेगी कभी।

जो भी मेरी पुण्य धरती की ओर आँख उठाएगा,
मेरे कहर से कभी बच नहीं पाएगा।

कितना भी दुर्गम पथ हो
कदापि नहीं डरूंगा मैं,
चप्पे-चप्पे पर रहेगी नजर मेरी
देश के गद्दारों पर दया नहीं होगी मेरी।

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

- बिलियम केरी

कुछ तो रहम करो

कुमारी आस्था बारा
पुत्री - ओलिभ बारा
पर्यवेक्षक

मम्मी ने पूछा – अपना स्कूल बैग व पुस्तकें बिखेरी हैं तुमने क्यों?
मैंने जवाब दिया – रख दो किचन के एक कोने में ये बस्ता
मम्मी ने टोका – किचन में क्यों?
मैंने कहा – स्कूल बैग नहीं, है ये चावल का बस्ता
बैग के बोझ ने कर दिया सत्यानाश हमारे बचपन का
इसकी वजन से दबता जाए हमारा बचपन
बोझ तले हमारी उम्र हो जाए पांच से पचपन
कुछ तो रहम करो हम बच्चों पर।

नए सत्र में बढ़ता जाए वजन बैग का
अपर के. जी. के बच्चे का बैग किलो तीन का
क्लास दूसरी में हो जाए यह पांच का
दसवीं पहुंचते-पहुंचते हो जाए यह दस का
प्राइवेट स्कूल में हर साल डाल दिया जाता
बिना जरूरत के भी कोर्स में जखीरा किताबों का
नहीं उठाया जाता अब वजन किलो दस-बीस का
कर दो हमारे बैग का वजन किलो एक का
कुछ तो रहम करो हम बच्चों पर।

सुबह उठो, तैयार होकर दौड़ लगाओ स्कूल को
कभी रेल-अवरोध झेलो, कभी जाम में फंसो
चिन्ता सताए कि कहीं बंद न हो जाए गेट स्कूल का
घर में किच-किच मम्मी की, होम वर्क पूरा करो
तो स्कूल में अलग टीचर की
स्कूल में थोड़ी-सी मस्ती करो तो कॉल गार्जियन को
कुछ तो रहम करो हम बच्चों पर।

स्कूल से लौटो घर को
भोजन से निपटकर भी नहीं है कुछ पल आराम
बैग उठाओ, हाजिरी लगाओ, कोचिंग के अखाड़े में
मम्मी ने फिर टोका – अखाड़ा क्यों?
मैंने कहा – पंद्रह-बीस की टोली में बैठे
हम बच्चों को तो लगे ये अखाड़ा ही
जहाँ भूगोल-इतिहास, रसायन-गणित
हम बच्चों को लगे गोल-गोल,
जैसे हमारी पृथ्वी है गोल।
जहां मिले न बच्चों को हर विषय का मूल ज्ञान

जो स्कूल में पढ़ा न पाए ढंग से
वही स्कूल के बाहर खोले बैठे हैं केन्द्र कोचिंग का
शिक्षा का नहीं केन्द्र है ये व्यापार का
अच्छा खासा जरिया है पैसा कमाने का
कोचिंग से लौटो घर को फिर होम-वर्क, प्रोजेक्ट का सिर-दर्द
कुछ तो रहम करो हम बच्चों पर।

कुछ क्षण राहत की सांस ली, बैठ गयी मनोरंजन के ध्येय से
पर क्या ! मम्मी ने फिर आवाज लगायी-
फिर से बैठ गयी सामने कार्टून के डिब्बे के
मैंने भी टोका – खुद तो बैठती हो आप सारे दिन
सामने सीरियल के डिब्बे के
मैंने झल्लाकर बन्द कर दिया आफत की इस डिबिया को।

मैं सोचने लगी – ये तो है सामान्य दिनों की गाथा
इससे भी कष्टकर है परीक्षा के दिनों की व्यथा।
मैंने अपने मन को समझाया – फिर से करने लगी तैयारी अगले दिन की दिनचर्या की।
मेरे मन में ख्याल आया – नहीं ऐसा कुछ उपाय सरकार के पास क्या?
उपाय सुनिश्चित करे वह हम बच्चों को कुछ राहत देने का।
करे शिक्षा-प्रणाली को कुछ दुरूस्त
जिससे हम बच्चे भी हो जाए कुछ चुस्त
कुछ तो रहम करो हम बच्चों पर।

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस – 2018

हर वर्ष की भांति वर्ष 2018 में भी हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन दिनांकः 03.09.2018 से 17.09.2018 तक हमारे कार्यालय में सफलतापूर्वक संपन्न किया गया । **हिन्दी पखवाड़ा** एवं **हिन्दी दिवस समारोह-2018** का उद्घाटन माननीय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) प.बंगाल के द्वारा दिनांक 03.09.2018 को किया गया। इस समारोह में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं यथा श्रुतलेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता, टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता, हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया तथा समारोह को सफल बनाया।

दिनांकः 14.09.2018 को हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश कल्याण अधिकारी, श्री मनोज कुमार मोवार द्वारा कार्यालय के सभी कर्मियों को पढ़कर सुनाया गया। इस अवसर पर श्री तिमिर भद्र, वरिष्ठ उप महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र-II), श्री विजय एस., उप महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र-I) एवं सभी शाखा अधिकारी उपस्थित थे। इस दिन कार्यालय के कर्मियों को यह संदेश भी दिया गया कि कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिन्दी में किया जाए।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन दिनांकः 17.09.2018 को किया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय ने कार्यालय की **गृह पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 13वें अंक का विमोचन** किया। प्रधान महालेखाकार द्वारा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु विभागीय **"चल वैजयंती शील्ड" कल्याण अनुभाग** को प्रदान की गई तथा **व्यक्तिगत रूप से हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पुरस्कार प्रशासन-II अनुभाग के श्री अभिषेक कुमार, आँकड़ा प्रविष्टि संचालक** को दिया गया। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई। प्रधान महालेखाकार महोदय, वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय, उप महालेखाकार महोदय तथा कल्याण अधिकारी द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं उप-विजेताओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशस्ति पत्र के साथ नकद पुरस्कार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कर्मचारियों को उपहार प्रदान किए गए। इस बार गृह पत्रिका सोनार बांग्ला के 12वें अंक के रचनाकारों को भी नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी समूह अधिकारियों ने हिन्दी पखवाड़ा के सफल आयोजन की प्रशंसा की, मुख्यतः प्रधान महालेखाकार महोदय ने अपने अभिभाषण में हिन्दी कक्ष को इस संबंध में बधाई दी।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस समारोह का समापन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी) द्वारा दिये गए अभिभाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

जीवन निकुंज में तुम्हारी रागिनी बजती रहे, सदा बजती रहे।
हृदय कमल में तुम्हारा आसन विराजते रहे, सदा विराजते रहे।

- रविन्द्रनाथ टैगोर

हिन्दी पखवाडा-2018 के दौरान आयोजित राजभाषा प्रतियोगिताओं के परिणाम

प्रतियोगिता : श्रुतलेखन एवं शब्दावली		
हिन्दी भाषी	**पुरस्कार**	**हिन्दीतर भाषी**
श्री संतोष कुमार, स.लेप.अ.	प्रथम	श्रीमती बैशाखी कर्मकार, लेप.
श्री अजीत कुमार यादव, व.लेप.	द्विती	श्री अचिंत्य कर्मकार, लेप.
कुमारी खुशबू, एम.टी.एस.	तृतीय	श्री चंदन बनर्जी, लेप.
प्रतियोगिता : हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन		
श्री अवध किशोर शर्मा, व.लेप.	प्रथम	श्री चंदन बनर्जी, लेप.
श्री संजय कुमार, व.लेप.	द्वितीय	श्री शुभोजित बनर्जी, व.लेप.
श्री संतोष कुमार सोनी, व.लेप.	तृतीय	श्री किंशुक किस्कु, डी.ई.ओ.
प्रतियोगिता : हिन्दी टंकण (संयुक्त रूप से)		
श्री सोनु कुमार चौधरी, डी.ई.ओ.	प्रथम	
श्री अभिषेक कुमार, डी.ई.ओ.	द्वितीय	
श्री पंकज प्रसाद, डी.ई.ओ.	तृतीय	
प्रतियोगिता : हिन्दी निबंध लेखन		
श्री अवध किशोर शर्मा, व.लेप.	प्रथम	श्री चंदन बनर्जी, लेप.
श्री संजय कुमार, व.लेप.	द्वितीय	श्री सुभोजित बनर्जी, व.लेप.
श्री संतोष कुमार सोनी, व.लेप.	तृतीय	श्री प्रसेनजीत सरकार, लेप.
प्रतियोगिता : हिन्दी वाद-विवाद		
श्री संतोष कुमार सोनी, व.लेप.	प्रथम	श्रीमती तुलिका चक्रवर्ती, व.लेप.
श्री अजीत कुमार यादव, व.लेप.	द्वितीय	श्री सुभोजित बनर्जी, व.लेप.
श्री लाल बाबू साह, एम.टी.एस.	तृतीय	श्री प्रसेनजीत सरकार, लेप.

प्रतियोगिता : क्विज़ प्रतियोगिता (संयुक्त रूप से)	
विजेता	**उप विजेता**
श्री अजीत कुमार यादव, व.लेप.	श्री राजीव दे, लेप.
श्री गोपाल मंडल, एम.टी.एस.	श्रीमती शागनिक दास, लेप.
श्री मोनोसिज प्रमाणिक, एम.टी.एस.	श्री तीर्थदेब चटर्जी, लेप.
श्री रितेश कुमार सिन्हा, डी.ई.ओ.	श्री अयन दास, लेप.
प्रतियोगिता : अंताक्षरी (संयुक्त रूप से)	
विजेता	**उप विजेता**
श्री जेवियर सोहम लियोन, स.लेप.अ.	श्री शुभब्रत दास, डी.ई.ओ.
श्री संदीप कुमार अधिकारी, व.लेप.	श्री शुभोजित बनर्जी, व.लेप.
श्री सुमन माइती, व.लेप.	श्री राजीव गिरी, डी.ई.ओ.
श्रीमती तुलिका चक्रवर्ती, व.लेप.	श्री रवि गुप्ता, डी.ई.ओ.
कोलटॉलिक शीर्ष स्तरीय राजभाषा प्रतियोगिता का परिणाम	
हिन्दी टंकण प्रतियोगिता	
श्री सोनु कुमार चौधरी, डी.ई.ओ. (प्रथम)	
श्री अभिषेक कुमार, डी.ई.ओ. (द्वितीय)	
हिन्दी निबंध प्रतियोगिता	
श्री संतोष कुमार सोनी, व.लेप. (द्वितीय)	श्री चन्दन बनर्जी, लेप. (तृतीय)

राजभाषा हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य करने हेतु वार्षिक "चल वैजयंती शील्ड" – **कल्याण अनुभाग**

राजभाषा हिन्दी में व्यक्तिगत रूप से सर्वोत्तम कार्य करने हेतु पुरस्कार - **श्री अभिषेक कुमार, डी.ई.ओ. (प्रशासन-II)**

विभिन्न गतिविधियाँ

1. चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन -

21 जून 2018 को इस कार्यालय में चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन कल्याण अनुभाग द्वारा ईशा योग फाउन्डेशन के सौजन्य से किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था – कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों मे योग के प्रति जागरुकता पैदा करना एवं योग को जीवन पद्धति का हिस्सा बनाना। कार्यक्रम का संचालन ईशा योग फाउन्डेशन, कोयम्बटूर (कोलकाता शाखा) की संचालिका सुश्री महक मेहतानी जी द्वारा किया गया। योग एवं प्राणायाम पर आधारित पावर प्वाईंट प्रजेनटेशन द्वारा सुश्री मेहतानी ने कार्यालय कर्मियों को योग के कई महत्वपूर्ण विधाओं को सिखाया, जिससे हमारे कर्मचारीगण काफी लाभान्वित हुए।

2. सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन –

भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने एवं सरकारी काम-काज में पूर्ण पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए 29 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2018 तक इस कार्यालय में सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया गया। कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण द्वारा इस अवसर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ शपथ ग्रहण किया गया। इस अवसर पर कल्याण अनुभाग द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था – "सरकारी लेखापरीक्षक भ्रष्टाचार उन्मूलन में एवं नये भारत के निर्माण में एक प्रभावी कदम उठा सकते हैं"। कार्यक्रम की समाप्ति पर तत्कालीन प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा विजेताओं को पुरस्कार दिया गया।

3. अन्तर कार्यालय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन –

कार्यालय कर्मी में खेल के प्रति जागरुकता बढ़ाने एवं आपसी भाई-चारे की भावना को मजबूत करते हुए दो कार्यालयों यथा प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल एवं प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल द्वारा 4 जनवरी 2019 को साल्टलेक में एक रोमांचक क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें आर्थिक एवं राजस्व लेखापरीक्षा की टीम विजयी हुई।

4. भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग हॉकी प्रतियोगिता 2019 –

खेल कूद के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए इस कार्यालय की हॉकी टीम 10 से 11 जनवरी 2019 को भुवनेश्वर में आयोजित आइ.ए.एंड ए.डी. पूर्वी क्षेत्र हॉकी टूर्नामेंट में विरोधी टीम ए.जी. ओडिसा को 3-1 गोल से परास्त कर विजयी घोषित हुई। हॉलाकि मार्च 2019 में आयोजित इण्टर जोनल हॉकी प्रतियोगिता में हमारी टीम रनर-अप रही थी। (फोटो-7 एवं 8)

5. 70वें गणतंत्र दिवस का पालन –

गणतांत्रिक मूल्यों एवं संवैधानिक परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहर्ष 26 जनवरी 2019 को ट्रेजरी बिल्डिंग्स लॉन में झण्डात्तोलन समारोह में भाग लिया। मुख्य अतिथि माननीय श्री एम. एस. सुब्रहयमण्यम, तत्कालीन प्रधान महालेखाकार एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में सुबह 9 बजे, 70वें गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया एवं समवेत स्वरों में राष्ट्रगान गाया गया। इस उपलक्ष्य पर प्रधान महालेखाकार ने सरकारी कर्मियों को राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं का स्मरण कराते हुए संवैधानिक एवं गणतांत्रिक मूल्यों को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाने की सलाह दी। (फोटो-9 एवं 10)

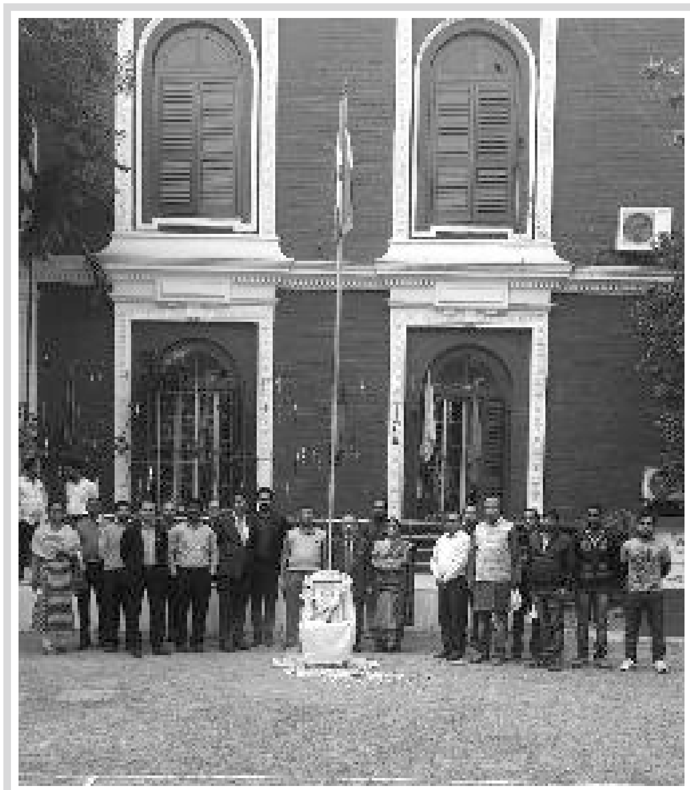

कला कभी खत्म नहीं होती, उसे बस त्याग दिया जाता है।

-लिओनार्दो दा विंची

बंगाल भूमि का गौरव कादम्बिनी गांगुली (18 जुलाई 1861 - 3 अक्टूबर 1923) भारत की पहली महिला स्नातक और दूसरी महिला फिजीशियन थीं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाषण देने वाली पहली महिला का गौरव भी कादम्बिनी गांगुली को ही प्राप्त है। कादम्बिनी गांगुली पहली दक्षिण एशियाई महिला थीं, जिन्होंने यूरोपियन मेडिसिन में प्रशिक्षण लिया था। इन्होंने कोयला खदानों में काम करने वाली महिलाओं की लचर स्थिति पर भी काफी कार्य किया।

हमारा देश पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक विभिन्न भाषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन वेश-भूषा एवं धार्मिक आस्था रूपी फूलों से अलंकृत है, जो कि विविधता में एकता का प्रतीक है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की विश्व में अलग पहचान है।